अंक 2

खाद्यपूर्णा दर्पण

प्रथम प्रकाशन वर्ष 2025–26

भारतीय खाद्य निगम, आंचलिक कार्यालय (उत्तर)

श्री आशुतोष अग्निहोत्री, भा.प्र.से., अध्यक्ष व प्रबंध निदेशक ने दिनांक 21.02.2025 को भारतीय खाद्य निगम, आंचलिक कार्यालय (उ.) परिसर का भ्रमण किया व अधिकारियों व कर्मचारियों से वार्ता की।

खाद्यपूर्णा दर्पण

प्रथम प्रकाशन वर्ष 2025-26

प्रधान संरक्षक
श्री सचिन्द्र कुमार पटनायक
कार्यकारी निदेशक (उत्तर)

संरक्षक
श्री संदीप कुमार पांडेय
महाप्रबंधक (राजभाषा)

मुख्य संपादक
डॉ. ए. वी. राव
उप महाप्रबंधक (राजभाषा)

संपादक
श्री पुखराज मीना
सहायक महाप्रबंधक (राजभाषा)

सहयोग
श्रीमती पूजा सैनी, स.श्रे.प्रथम (राजभाषा)
श्रीमती रिमझिम, स.श्रे.प्रथम (राजभाषा)
श्री नरेंद्र पाण्डेय, स.श्रे.द्वितीय (राजभाषा)
श्रीमती रजनी मिश्रा, स.श्रे.द्वितीय (राजभाषा)
श्री अभिशेख कुमार साव, स.श्रे.तृतीय (राजभाषा)

(पत्रिका में प्रकाशित रचनाओं की मौलिकता का दायित्व स्वयं रचनाकारों का है)

पत्र व्यवहार का पता :
आंचलिक कार्यालय (उत्तर)
भारतीय खाद्य निगम, ए 2ए-2बी, सैक्टर-24, नोएडा- (उत्तर प्रदेश)
ई-मेल : ednorth.fci@gov.in,
बेबसाईट : https://fci.gov.in/zone/north-zone/

भारतीय खाद्य निगम, आंचलिक कार्यालय (उत्तर), नोएडा द्वारा नि:शुल्क तथा निजी वितरण हेतु प्रकाशित

भारत के एक सिरे से दूसरे सिरे तक हिंदी भाषा कुछ न कुछ सर्वत्र समझी जाती है। - पं. कृ. रंगनाथ पिल्लयार

इस अंक में

रचना	नाम	पृ.सं.
☆ संदेश		5-13
☆ संपादकीय	पुखराज मीना, सहायक महाप्रबंधक (राजभाषा)	14
☆ अनुजा	अनुपम बी. व्यास, मुख्य महाप्रबंधक (राजभाषा)	15
☆ पुरुषार्थ	संदीप कुमार पांडेय, महाप्रबंधक (राजभाषा)	16-18
☆ जरा सोचो तो... कौन हूं मैं	डॉ. ए. वेंकटेश्वर राव, उप महाप्रबंधक (राजभाषा)	19
☆ भारत की खाद्य सुरक्षा को मजबूत बनाता भारतीय खाद्य निगम	संतोष कुमार कन्नोजिया, स.म.प्र. (लेखा)	20-21
☆ सावन का मौन	दीप्ति श्रीवास्तव, स.श्रे.द्वि. (तक.)	21
☆ बाल प्रतिभा		22
☆ सतर्कता जागरूकता सप्ताह 2024		23
☆ मां	जीनत जहां	24
☆ ये है भारत महान	नीलम कुमारी, प्रबंधक (सा.)	24
☆ महिला शक्ति और आने वाला कल	देवेन्द्र कुमार रावत, स.श्रे.तृ.(लेखा)	25
☆ हिंदी पखवाड़ा 2024 की झलकियां		26-27
☆ मानव चेतना बनाम कृत्रिम बुद्धिमता	रजनी यादव, प्रबंधक (सा.)	28-29
☆ देखा सूरज चढ़ आया	गौरव झा, स.श्रे.तृ(तक.)	29
☆ ईमानदारी	सुमन सिंह, स.श्रे.द्वि. (आगार)	30
☆ समाज से आजाद	अरूण कुमार, स.श्रे.तृ (सा.)	31
☆ हिंदी राष्ट्र की बिंदी	रिनी जोशी, स.श्रे.द्वि.	31
☆ मोबाइल वरदान या अभिशाप	चेतन बिष्ट, स.श्रे.तृ. (लेखा)	32
☆ आंचलिक खेल संवर्धन समिति द्वारा आयोजित गतिविधियों की तस्वीरें		33
☆ दो आने	ऋचा शुक्ला, स.श्रे.द्वि. (राजभाषा)	34
☆ तुझको चलना होगा	ओशो एम एल जैन, स.श्रे.तृ.(तक.)	34
☆ अंदर का दर्द	गगनदीप कौर, स.श्रे.द्वि. (तक.)	35
☆ नानी की कहानी, दादी का प्यार, क्यों बुलाता है बचपन हर बार?	देवेश कुमार पांडेय, स.श्रे.द्वि.(तक.)	36-37
☆ कृत्रिम बुद्धिमत्ता	तेजश्री सुभाष शिंदे, स.श्रे.तृ.(तक.)	37
☆ अगर मिल जाती मुझे वह खिड़की वाली सीट	प्रदीप मिश्रा, प्रबंधक (परि.)	38
☆ भारतीय खाद्य निगम, आंचलिक कार्यालय (उ.) में आयोजित विभिन्न कार्यक्रमों की झलकियां		39
☆ सुनहरे ख्वाब	प्रबल प्रकाश, स.श्रे.तृ. (सा.)	40-41
☆ राजभाषा हिंदी की विकास यात्रा	विकास त्रिपाठी, स.श्रे.प्र.(सा.)	42-43
☆ मन की व्यथा	मनोज कुमार यादव, स.श्रे.द्वि. (तक.)	43
☆ भारतीय खाद्य निगम, आंचलिक कार्यालय (उत्तर) के सौजन्य से आयोजित विशेष हिंदी कार्यशाला		44-45
☆ मृत्यु नहीं मुक्ति	वर्षा सक्सेना, स.श्रे.तृ.	46-47
☆ हिंदी को संभाले हैं	शरद भारद्वाज, प्रबंधक (परिचालन)	47
☆ नींव में अंबेडकर	उदित कुमार सिंह, स.श्रे.प्र.(सा.)	48
☆ तीसरी छींक	दीपा कुनियाल, स.श्रे.प्र. (लेखा)	49-50
☆ डॉ. ए. वी. राव, उप महाप्रबंधक (राजभाषा) एवं श्री पुखराज मीना, सहायक महाप्रबंधक (राजभाषा) द्वारा आंचलिक कार्यलिय (उ.) के स्थानीय अनुभागों का राजभाषायी निरीक्षण।		51

आशुतोष अग्निहोत्री, भा.प्र.से.
अध्यक्ष एवं प्रबंध निदेशक
भारतीय खाद्य निगम, मुख्यालय

<u>संदेश</u>

यह अत्यंत हर्ष का विषय है कि आंचलिक कार्यालय (उ.) द्वारा एक नए जोश के साथ 'खाद्यपूर्णा दर्पण' के द्वितीय अंक का प्रकाशन किया जा रहा है। यह प्रयास अत्यंत ही सराहनीय है, इसके लिए आंचलिक कार्यालय (उत्तर) को बहुत-बहुत बधाई।

किसी भी संस्थान की गृह राजभाषा पत्रिका उस संस्थान का दर्पण है जिसमें उस संस्थान की व कार्यालय की कार्यशैली, वातावरण, बौद्धिकता व रचनात्मकता दृष्टिगोचर होती है। गृह राजभाषा पत्रिका कार्यालय के सभी कार्मिकों को अपनी लेखन क्षमता को प्रदर्शित करने का माध्यम बनती है। साथ ही ये एक माध्यम है जिसके द्वारा राजभाषा हिंदी में कार्य करने हेतु सभी को प्रेरित किया जा सके।

भारतीय खाद्य निगम न सिर्फ देश की खाद्य सुरक्षा के प्रति अपनी जिम्मेदारियां बखूबी निभा रहा है बल्कि अपने कार्यालयों में सरकार की राजभाषा संबंधी नीतियों का भी अनुपालन सुनिश्चित कर रहा है। मुझे उम्मीद है कि प्रथम अंक की सफलता की भांति ही 'खाद्यपूर्णा दर्पण' का द्वितीय अंक भी पाठकों व सुधिजनों के बीच लोकप्रिय होगा।

इन्हीं शुभकामनाओं के साथ आंचलिक कार्यालय (उत्तर) को अग्रिम बधाई।

<u>(आशुतोष अग्निहोत्री)</u>

जापानियों ने जिस ढंग से विदेशी भाषाएं सीखकर अपनी मातृभाषा को उन्नति के शिखर पर पहुंचाया है उसी प्रकार हमें भी मातृभाषा का भक्त होना चाहिए। - श्यामसुंदर दास

सचिन्द्र कुमार पटनायक
कार्यकारी निदेशक (उ.)
भारतीय खाद्य निगम
आंचलिक कार्यालय (उ.), नोएडा

संदेश

मुझे यह जानकार हार्दिक प्रसन्नता हो रही है कि आंचलिक कार्यालय (उत्तर) द्वारा "खाद्यपूर्णा दर्पण" गृह पत्रिका के द्वितीय अंक का प्रकाशन होने जा रहा है। पत्रिका का प्रकाशन कार्यालय में कार्यरत अधिकारियों तथा कर्मचारियों में सृजनात्मक प्रतिभा का विकास करता है तथा राजभाषा के कार्यान्वियन में एक सेतु का काम करता है।

राजभाषा हिंदी का कार्यान्वियन एक संवैधानिक अपेक्षा है लेकिन अनुपालन के लिए केवल आदेश ही पर्याप्त नहीं है बल्कि इसके लिए हमें हिंदी को दिल से अपनाना होगा। हिंदी न केवल हमारी राजभाषा और राष्ट्रभाषा है अपितु हमारी जननी भी है। इसका विकास और संवर्धन करना हमारा नैतिक दायित्व है। कार्यालयीन कार्यों का निष्पादन हिंदी में कर आपके द्वारा राजभाषा के विकास के साथ-साथ राजभाषा नियमों के प्रति उत्तरदायित्व का भी निर्वाहिन हो रहा है।

मुझे आशा है कि पत्रिका के प्रकाशन से राजभाषा हिंदी के विकास का मार्ग प्रशस्त होगा। पत्रिका में प्रकाशित लेख एवं रचनाओं की मौलिकता एवं भाषा के सौन्दर्य को देख कर मुझे यह अहसास हो रहा है कि हमारे अधिकारी-कर्मचारी अपने भाषा के महत्व एवं उसकी पहचान को कायम रखने में राजभाषा एवं राष्ट्र भाषा हिंदी को अंगीकार करने में कोई कसर नहीं छोड़ रहे हैं। मैं आंचलिक कार्यालय के उन सभी अधिकारियों एवं कर्मचारियों को बधाई देता हूँ जिन्होंने निष्ठा एवं लगन के साथ पत्रिका के प्रकाशन में अपना पूर्ण सहयोग प्रदान किया है, साथ ही साथ हिंदी में काम करना सुनिश्चित किया है। मैं इस पत्रिका की सफलता की कामना करता हूँ।

शुभकामनाओं के साथ !

सचिन्द्र
5/9/25

(सचिन्द्र कुमार पटनायक)

किसी देश के ग्रंथ बनने तक वैदेशिक भाषा में शिक्षा नहीं होती थी। देश की भाषा में शिक्षा होने के कारण स्वयं ग्रंथ बनते गए हैं। - रामावतार शर्मा

अजय कुमार
कार्यकारी निदेशक (राजभाषा)
भारतीय खाद्य निगम, मुख्यालय

संदेश

मुझे यह जानकर हर्ष हो रहा है कि भारतीय खाद्य निगम, आंचलिक कार्यालय (उत्तर), नोएडा द्वारा गृह पत्रिका "खाद्यपूर्णा दर्पण" के दूसरे अंक का प्रकाशन होने जा रहा है। मेरा यह मानना है कि यह अंक निगम कर्मियों में अपनी भाषा हिंदी के प्रति अपनत्व का संचार करने में कामयाब होगा।

हिंदी के विकास में राजभाषा गृह पत्रिका का अपना विशिष्ट महत्व होता है। यह पत्रिका हिंदी के प्रगामी प्रयोग, विचारों के आदान-प्रदान करने तथा अपनी प्रतिभा को प्रदर्शित करने में सहायक एवं लाभप्रद सिद्ध होगी।

मुझे आशा है कि पत्रिका के प्रकाशन से राजभाषा हिंदी के विकास का मार्ग प्रशस्त होगा। मैं उन सभी अधिकारियों एवं कर्मचारियों को बधाई देता हूँ जिन्होंने निष्ठा एवं लगन के साथ पत्रिका के प्रकाशन में अपना पूर्ण सहयोग प्रदान किया है। साथ ही साथ हिंदी में काम करना शुरू किया है। मैं इस पत्रिका की सफलता की कामना करता हूँ।

शुभकामनाओं के साथ।

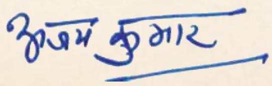

(अजय कुमार)

जितना और जैसा ज्ञान विद्यार्थियों को उनकी जन्मभाषा में शिक्षा के देने से अल्पकाल में हो सकता है;
उतना और वैसा पराई भाषा में सुदीर्घ काल में भी

ओ. पी. डाणी

मुख्य महाप्रबंधक (राजभाषा)

भारतीय खाद्य निगम, मुख्यालय

संदेश

मुझे यह जानकर हर्ष हो रहा है कि आंचलिक कार्यालय (उत्तर), नोएडा अपनी गृह पत्रिका 'खाद्यपूर्णा दर्पण' के द्वितीय अंक का प्रकाशन कर रहा है। किसी भी संगठन में पत्रिकाओं की भूमिका अत्यंत महत्वपूर्ण होती है। पत्रिका न केवल संगठन विशेष की गतिविधियों और उपलब्धियों का दर्पण है अपितु जनसाधारण के समक्ष भी प्रस्तुत करने का सशक्त माध्यम होती हैं। हिंदी पत्रिकाओं की भूमिका तो इसलिए और भी महत्वपूर्ण हो जाती है क्योंकि वे बड़े पाठक वर्ग द्वारा पढ़ी जाती है।

मेरी कामना है कि यह गृह पत्रिका ना केवल निगम के कार्यकलापों और उपलब्धियों के बारे में पाठकों के सामने तस्वीर का सही रुख पेश करेगी बल्कि इससे राजभाषा हिंदी को निगम में प्रभावी ढंग से लागू करने में भी मदद मिलेगी और हम हिंदी के वार्षिक कार्यक्रम में निर्धारित लक्ष्यों को प्राप्त करने की दिशा में तत्परता से अग्रसर होंगे।

मैं 'खाद्यपूर्णा दर्पण' के सफल प्रकाशन की कामना करता हूँ।

(ओ. पी. डाणी)

अनुपम बी. व्यास
मुख्य महाप्रबंधक (सामान्य)
भारतीय खाद्य निगम
आंचलिक कार्यालय (उ.), नोएडा

संदेश

भारतीय खाद्य निगम, आंचलिक कार्यालय (उ.) की राजभाषा पत्रिका "खाद्यपूर्णा दर्पण" के दूसरे अंक के प्रकाशन हेतु राजभाषा टीम को मेरी ओर से शुभकामनाएं। राजभाषा का समुचित और प्रभावी प्रयोग हमारी संस्थान की सफलता एवं राष्ट्रभक्ति की भावना को मजबूत करता है। हिंदी भाषा के प्रचार-प्रसार में हमारी भूमिका अत्यंत महत्वपूर्ण है, जिससे हम न केवल सरकारी कार्यों में पारदर्शिता लाते हैं, बल्कि आम जनमानस के बीच भी अपनी पहुँच बढ़ा पाते हैं।

हमें गर्व है कि भारतीय खाद्य निगम, आंचलिक कार्यालय (उ.) हिंदी के प्रयोग को बढ़ावा देने के लिए निरंतर प्रयासरत है। इस पत्रिका के माध्यम से हम राजभाषा से संबंधित नवीनतम गतिविधियों, सफलताओं एवं चुनौतियों को साझा करते हुए सभी विभागों को प्रोत्साहित करना चाहते हैं कि वे अपने कार्य क्षेत्र में राजभाषा के प्रयोग को और भी प्रभावी बनाएं। मुझे पूर्ण विश्वास है कि यह पत्रिका हिंदी के प्रगामी प्रयोग, विचारों के आदान-प्रदान करने में लाभप्रद होगी।

आइए, हम सब मिलकर हिंदी को हमारी राजभाषा के रूप में सम्मानित करते हुए इसे और अधिक सशक्त बनाएं। यह हमारी सांस्कृतिक पहचान और राष्ट्र के विकास की दिशा में एक महत्वपूर्ण कदम है।

आप सभी को इस पत्रिका के लिए शुभकामनाएँ।

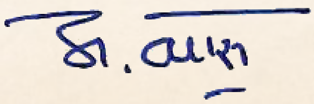

(अनुपम बी. व्यास)

विदेशी भाषा में शिक्षा होने के कारण हमारी बुद्धि भी विदेशी हो गई है। - माधवराव सप्रे

सुधीर कुमार
महाप्रबंधक (उत्तर अंचल)
भारतीय खाद्य निगम,
आंचलिक कार्यालय (उ.), नोएडा

संदेश

भारतीय खाद्य निगम, आंचलिक कार्यालय (उ.) की गृह पत्रिका "खाद्यपूर्णा दर्पण" का द्वितीय अंक आप सबके सम्मुख प्रस्तुत करते हुए मुझे बहुत खुशी हो रही है। यह पत्रिका निगम में कार्यरत हिंदी प्रेमियों के लिए उनके लेखन व रचनात्मकता को एक मंच प्रदान करने का कार्य कर रही है। पत्रिका में ज्ञानपरक लेख, कविता, कहानी, संस्मरण का संगम है। ये पत्रिका संपूर्ण रूप से संस्थान के कार्यों और कार्मिकों का प्रतिबिंब है।

भारतीय खाद्य निगम राजभाषा हिंदी के संवैधानिक प्रावधानों को ध्यान में रखते हुए संघ की राजभाषा नीति का अनुपालन सुनिश्चित करने हेतु प्रयासरत है। इसी दिशा में निगम के कई कार्यालयों द्वारा राजभाषा पत्रिका का प्रकाशन किया जा रहा है जोकि अत्यंत हर्ष का विषय है।

इस पत्रिका के माध्यम से आंचलिक कार्यालय (उ.) व अधीनस्थ कार्यालयों में सेवारत सभी अधिकारी व कर्मचारी अपना लेखकीय रुचि का प्रदर्शन कर सकेंगे व निगम में राजभाषा के प्रति अपनी जिम्मेदारी निभा सकेंगे।

इस पत्रिका के सफल प्रकाशन हेतु सभी को मेरी ओर से असीम शुभकामनाएं। आशा करता हूं कि पत्रिका का दूसरा अंक भी पहले अंक की तरह ही सफल रहेगा।

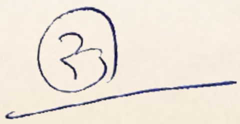

(सुधीर कुमार)

मैं महाराष्ट्रीयन हूं, परंतु हिंदी के विषय में मुझे उतना ही अभिमान है जितना किसी हिंदी भाषी को हो सकता है। – माधवराव सप्रे

संदीप कुमार पांडेय
महाप्रबंधक (राजभाषा)
भारतीय खाद्य निगम
आंचलिक कार्यालय (उ.), नोएडा

संदेश

हमारे संस्थान की राजभाषा पत्रिका 'खाद्यपूर्णा दर्पण' का द्वितीय अंक हमारे निरंतर प्रयासों का प्रतीक है, जिससे हम राजभाषा हिंदी के प्रचार-प्रसार और उसके व्यावहारिक प्रयोग को संस्थागत संस्कृति का अभिन्न अंग बना रहे हैं। राजभाषा केवल संप्रेषण का माध्यम नहीं, बल्कि हमारे विचारों, भावनाओं और सांस्कृतिक पहचान की संवाहिका भी है।

भारत सरकार की राजभाषा नीति के अनुरूप, हमारा लक्ष्य न केवल कार्यालयीन कार्यों में हिंदी के प्रयोग को बढ़ाना है, बल्कि कर्मचारियों में भाषाई आत्मविश्वास भी विकसित करना है। कार्यालयीन कार्यों में हिंदी का अधिकाधिक प्रयोग, न केवल प्रशासनिक दक्षता को बढ़ाता है, बल्कि संस्थान में आपस में बेहतर संवाद स्थापित करने में भी सहायक होता है।

'खाद्यपूर्णा दर्पण' के माध्यम से हमें अपने कर्मचारियों की रचनात्मक अभिव्यक्ति को मंच देने का भी सुअवसर प्राप्त होता है। यह न केवल भाषा के विकास का माध्यम है, बल्कि कर्मचारियों के भीतर छिपी साहित्यिक प्रतिभा को भी सामने लाने में सहायक है।

मैं सभी अधिकारियों और कर्मचारियों से आग्रह करता हूँ कि वे इस पत्रिका में सक्रिय सहभागिता करें और कार्यालयीन कार्यों के साथ-साथ रचनात्मक लेखन में भी हिंदी के प्रयोग को प्रोत्साहित करें।

हिंदी का सरल, सहज और व्यावहारिक प्रयोग ही इसे जन-जन की भाषा बनाएगा।

आशा करता हूं कि पत्रिका का ये अंक आप सभी को बहुत पसंद आएगा। इसके साथ ही मेरी ओर से पत्रिका प्रकाशन से जुड़े सभी अधिकारी व कर्मचारी व लेखक गण को शुभकामनाएं।

(संदीप कुमार पांडेय)

मनुष्य सदा अपनी मातृभाषा में ही विचार करता है। इसलिए अपनी भाषा सीखने में जो सुगमता होती है दूसरी भाषा में हमको वह सुगमता नहीं हो सकती। - डॉ. मुकुन्दस्वरूप वर्मा

दीपक सिन्हा
महाप्रबंधक (वित्त)
भारतीय खाद्य निगम
आंचलिक कार्यालय (उ.), नोएडा

संदेश

भारतीय खाद्य निगम एक संस्था के रूप में देश के प्रत्येक व्यक्ति तक खाद्यान्न की आपूर्ति सुनिश्चित करता है। इसके साथ ही संघ की संवैधानिक प्रावधानों के अनुसार निगम राजभाषा के प्रति भी अपनी अहम जिम्मेदारी बखूबी निभा रहा है। इसी दिशा में 'खाद्यपूर्णा दर्पण' का द्वितीय अंक का प्रकाशन होने जा रहा है। आज, जब हम राजभाषा के माध्यम से अपने कार्यों को और प्रभावी बनाने के लिए निरंतर प्रयासरत हैं, हमें यह समझने की आवश्यकता है कि भाषा न केवल संवाद का माध्यम है, बल्कि यह हमारी संस्कृति, पहचान और एकता का भी प्रतीक है।

हमें गर्व है कि हमारे वित्तीय कार्यों को पारदर्शिता, जिम्मेदारी और संप्रेषणीयता के साथ कार्यान्वित किया जा रहा है और राजभाषा हिंदी का उपयोग इसे और अधिक सुलभ, प्रभावी और व्यावसायिक रूप से सक्षम बना रहा है। गृह राजभाषा पत्रिका न केवल हमारी कार्यप्रणाली की समीक्षा करती है, बल्कि यह हमें यह समझने का अवसर देती है कि हम किस दिशा में अग्रसर हो रहे हैं और हमें कहां सुधार की आवश्यकता है।

हमारा यह उद्देश्य है कि भारत सरकार की नीतियाँ, योजनाएँ और कार्य प्रणाली हिंदी भाषा में अधिक से अधिक व्यक्त की जाए, ताकि वह व्यापक जनसमूह तक पहुंच सके। इसे ध्यान में रखते हुए हमें निरंतर प्रयास करने की आवश्यकता है कि हम हिंदी भाषा के प्रति अपनी प्रतिबद्धता को और मजबूत करें और इसके उपयोग में वृद्धि करें।

आशा है कि इस पत्रिका के माध्यम से हमें प्रेरणा मिलेगी और हम एक साथ मिलकर हिंदी भाषा के प्रचार-प्रसार के कार्य को और अधिक प्रभावी बनाएंगे।

(दीपक सिन्हा)

राष्ट्रीयता का भाषा और साहित्य के साथ बहुत ही घनिष्ठ और गहरा संबंध है। - डॉ. राजेन्द्र प्रसाद

डॉ ए. वी. राव
उप महाप्रबंधक (राजभाषा)
भारतीय खाद्य निगम

संदेश

मुझे इस बात की प्रसन्नता है कि भारतीय खाद्य निगम, आंचलिक कार्यालय (उ.) की गृह पत्रिका “खाद्यपूर्णा दर्पण” का द्वितीय अंक प्रकाशित किया जा रहा है। पत्रिका के पहले अंक के समान ही इस अंक में भी भारतीय खाद्य निगम की कार्यशैली के संबंध में ज्ञानपरक लेख व अधिकारियों एवं कर्मचारियों की मूल रचनाएं समाहित हैं। मुझे आशा ही नहीं पूर्ण विश्वास है कि आप सभी को पत्रिका का ये दूसरा अंक बहुत ही सूरुचिपूर्ण प्रतीत होगा।

भाषा केवल संवाद का ही माध्यम नहीं है बल्कि उसका अपना एक विज्ञान व उसकी अपनी एक तकनीक है। आज भारत सरकार के कंठस्थ-2.0 अनुवाद टूल के साथ आप अपने रोजमर्रा के कार्यालयीन कार्य का अनुवाद कर उसका निस्तारण हिंदी में कर सकते हैं। इसके अतिरिक्त कृत्रिम बुद्धिमता व अन्य उन्नत तकनीकों के माध्यम से हिंदी में काम करना पहले से बहुत ही आसान हो गया है। ये पत्रिका आपको हिंदी में रची-बसी कविता, कहानियों के माध्यम से आपको अपनी ओर खींचेगी और उम्मीद करता हूं कि आप अपना कार्यालयीन कार्य भी हिंदी में करने के लिए प्रोत्साहित होंगे।

हिंदी के लिए प्रेरणा व प्रोत्साहन के साथ ही उसके भाव में रचना भी उतना ही आवश्यक है और ये पत्रिका इसका माध्यम बनने में सफल रहेगी।

शुभकामनाएं।

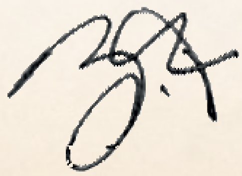

(ए. वी. राव)

हिंदी पर ना मानो ताना, सभा बतावे हिंदी माना। - नूर मुहम्मद

पुखराज मीना
सहायक महाप्रबंधक (राजभाषा)
भारतीय खाद्य निगम
आंचलिक कार्यालय (उ.), नोएडा

संपादकीय

मुझे यह घोषणा करते हुए अत्यंत हर्ष और गर्व का अनुभव हो रहा है कि “खाद्यपूर्णा दर्पण” पत्रिका का द्वितीय अंक आपके सम्मुख प्रस्तुत है। यह पत्रिका केवल शब्दों का संकलन नहीं, बल्कि विचारों, संवादों, परंपराओं और समर्पण का दर्पण है। इस पत्रिका के माध्यम से हमारा प्रयास सदैव यही रहा है कि हम साहित्य, कला, संस्कृति, शिक्षा और समाज से जुड़े विविध पहलुओं को आपके समक्ष प्रस्तुत करें तथा राजभाषा हिंदी के प्रचार-प्रसार में अपना योगदान दें।

इस पत्रिका के माध्यम से कार्मिकों ने लेख, कविता, कहानी द्वारा अपने अनुभव एवं विचार साझा किए हैं। हमारे सहयोगियों, लेखकों तथा पाठकों का निरंतर प्रयास हमारे लिए ऊर्जा एवं प्रोत्साहन है। हमें गर्व है कि निगम में हिंदी के प्रति आस्था रखने वाले लोगों की संख्या इतनी अधिक है कि एक संपादक के रूप में रचनाओं के चयन में दुविधा की स्थिति रही। हमारे कार्मिकों के इतनी अधिक रुचि के साथ इस पत्रिका के लिए अपनी रचनाएं भेजना इस बात के द्योतक हैं कि ये कार्मिक सिर्फ देश में खाद्य सुरक्षा के लिए ही नहीं बल्कि संविधान की राजभाषा नीति के प्रति भी उतने ही अधिक निष्ठावान हैं। हमारी पत्रिका का लक्ष्य भी यही है कि निगम में राजभाषा नीति के कार्यान्वियन में सभी अपनी जिम्मेदारियों को बखूबी निभाएं। "खाद्यपूर्णा दर्पण" का उद्देश्य केवल जानकारी देना नहीं, बल्कि सोच को नई दिशा देना है, ताकि हमें समाज के प्रति और अधिक सजग, संवेदनशील और सतत बना सके।

मैं आशा करता हूं कि पत्रिका के दूसरे अंक को भी आप सबका भरपूर प्रेम प्राप्त होगा। आपके विचार, सुझाव और सहयोग हमारे लिए अनमोल हैं। आइए, इस ज्ञानयात्रा में साथ चलें और हिंदी सभ्यता के इस सुंदर दर्पण को और भी उज्ज्वल बनाएं।

(पुखराज मीना)

आप जिस तरह बोलते हैं, बातचीत करते हैं, उसी तरह लिखा भी कीजिए। भाषा बनावटी नहीं होनी चाहिए। - महावीर प्रसाद द्विवेदी

अनुजा

अनुपम बी. व्यास
मुख्य महाप्रबंधक (सा.)
भारतीय खाद्य निगम
आंचलिक कार्यालय (उ.), नोएडा

ईश्वर का अंश हो तुम,
या उसका ही वरदान हो।
नासमझ हो, या अनसुलझी पहेली कोई,
या गूढ़ कोई अनबूझी पहचान हो॥

सूरज-सा तेज, मुख-मंडल पर,
शहद-सी मीठी मुस्कान है।
शिव से भी ज़्यादा भोली तुम,
छल-कपट से बिल्कुल अनजान हो॥

फूलों सी नाज़ुक कोमल तुम,
बाल-सुलभ अठखेलियां तुम्हारा परिधान है।
सोने चांदी की, धन-संपदा से नहीं,
अपितु, देवत्व को पाकर ही धनवान हो॥

शब्दों से परे तुम, भावों से सराबोर हो,
व्यक्त, मगर अधरों से नहीं, आंखें ही ज़ुबान है।
दुनिया की खबर नहीं, ना अपना ही कोई पता,
संन्यासिनी हो या गौतम-सी ज्ञानवान हो॥

हर पिता की यही इच्छा की उसकी बेटी,
पढ़-लिखकर समझदार और विद्वान हो।
पर मेरी यह कामना है कि, बड़ी मत होना तुम,
यूंही, ऐसे ही, भोली रहो, जैसे स्वयं भगवान हो॥

हिंदी भाषा की उन्नति के बिना हमारी उन्नति असंभव है। - गिरधर शर्मा

संदीप कुमार पांडेय
महाप्रबंधक (राजभाषा)
भारतीय खाद्य निगम
आंचलिक कार्यालय (उ.), नोएडा

पुरुषार्थ

पुरुषार्थ से तात्पर्य मानव के लक्ष्य या उद्देश्य से है ('पुरुषैर्थ्यते इति पुरुषार्थः')।

पुरुषार्थ = पुरुष+अर्थ =पुरुष का तात्पर्य विवेक संपन्न मनुष्य से है अर्थात विवेक शील मनुष्यों के लक्ष्यों की प्राप्ति ही पुरुषार्थ है। प्रायः मनुष्य के लिये वेदों में चार पुरुषार्थों का नाम लिया गया है - धर्म, अर्थ, काम और मोक्ष। इसलिए इन्हें 'पुरुषार्थचतुष्टय' भी कहते हैं। महर्षि मनु पुरुषार्थ चतुष्टय के प्रतिपादक हैं।

भारतीय जीवन में पुरुषार्थ का अर्थ "मानव के उद्देश्य" या "प्रयोजन" है, जो जीवन के चार मुख्य लक्ष्यों को संदर्भित करता है: धर्म, अर्थ, काम और मोक्ष। यह एक प्राचीन भारतीय दार्शनिक अवधारणा है जो एक संतुलित और सार्थक जीवन जीने का मार्गदर्शन करती है।

चार पुरुषार्थों का सरल स्पष्टीकरण:

1. धर्म:

धर्म का विवेचन करते समय समझाया गया है कि धर्म वह है जिससे अभ्युदय और निःश्रेयस की सिद्धि हो-
यतो अभ्युदयनिःश्रेयससिद्धिः स धर्मः। (कणाद, वैशेषिकसूत्र, 1.1.2)
'अभ्युदय' से लौकिक उन्नति का तथा 'निःश्रेयस' से पारलौकिक उन्नति एवं कल्याण का बोध होता है। अर्थात जीवन के ऐहिक और पारलौकिक दोनों पक्षों से धर्म को जोड़ा गया था। धर्म की इससे अधिक उदार परिभाषा और क्या हो सकती है? धर्म शब्द का अर्थ अत्यन्त गहन और विशाल है। इसके अन्तर्गत मानव जीवन के उच्चतम विकास के साधनों और नियमों का समावेश होता है।

धर्म क्या है?

धर्म अपने मूल रूप में बहुत व्यापक अर्थ वाला है | एक सामान्य पारम्परिक हिन्दू से पूछेंगे तो इसके अनेक अर्थ मिलेंगे | मंदिर में आरती के पश्चात उद्घोष होता है – धर्म की जय हो, अधर्म का नाश हो! यहाँ धर्म का अर्थ क्या है? किसी एक रिलीजन की जय हो? नहीं | सत्य की जय हो, सदाचार की जय हो, आदर्श सिद्धांतों की जय हो | पापों का, बुराइयों का नाश हो | जब कहते हैं अमुक व्यक्ति बहुत धार्मिक है इसका अर्थ क्या हुआ? बहुत कट्टर मुसलमान है? इसका अर्थ हुआ कि वह भला है, सदाचारी है, परोपकारी है, ईमानदार है, सत्यवादी है इत्यादि |

गोस्वामी तुलसीदास राम चरित मानस में लिखते हैं –"परहित सरिस धरम नहीं भाई"
मैथलीशरण गुप्त "जयद्रथ वध" में लिखते हैं –
"अधिकार खो कर बैठ रहना, यह महा दुष्कर्म है; न्यायार्थ अपने बन्धु को भी दण्ड देना धर्म है"
यहाँ धर्म का अर्थ हुआ नैतिक कर्त्तव्य | ये एक सामान्य पारम्परिक हिन्दू की समझ है | उसके लिए ये सब धर्म है | उसको आप कहेंगे धर्म मतलब रिलीजन तो उसको ये बात नहीं पचेगी |

अब धर्म शब्द की उत्पत्ति और उसके मूल प्रारम्भिक प्रयोग (जो कि वैदिक शास्त्रों में मिलता है) को देखें –
धारयति इति धर्मः – धर्म शब्द संस्कृत की धृ धातु से बना है, जिसका अर्थ है धारण करना | अतः जो धारण करने योग्य हो, वह धर्म है |

मनु ने धर्म के दस लक्षण बताये हैं:
धृतिः क्षमा दमोऽस्तेयं शौचमिन्द्रियनिग्रहः। धीर्विद्या सत्यमक्रोधो, दशकं धर्मलक्षणम् ॥ (मनुस्मृति 6.92)

अर्थात "धृति (धैर्य), क्षमा (दूसरों के द्वारा किये गये अपराध को माफ कर देना, क्षमाशील होना), दम (अपनी वासनाओं पर नियन्त्रण करना), अस्तेय (चोरी न करना), शौच (अन्तरङ्ग और बाह्य शुचिता), इन्द्रिय निग्रहः (इन्द्रियों को वश मे रखना), धी (बुद्धिमत्ता का प्रयोग), विद्या, सत्य और अक्रोध (क्रोध न करना); ये दस धर्म के लक्षण हैं।" (ये नहीं लिखा कि हिन्दू, मुस्लिम, सिख, ईसाई ये चार धर्म हैं)

आरम्भो न्याययुक्तो यः स धर्म इति स्मृतः। अन्यायस्तु अधर्म इति एतत् शिष्टानुशासनम्।।
(म.भा. वन. 207/77)
अर्थात "जो कुछ भी न्यायपूर्वक किया जाता है वही धर्म है। तथा अन्याय ही अधर्म है, ऐसा शिष्टजनों का उपदेश है।"

पुत्र को पुत्रधर्म का पालन करना है, पिता को पितृधर्म का पालन करना है – इसका अर्थ क्या हुआ? पुत्र का जो उचित कर्त्तव्य है या पिता का जो उचित कर्त्तव्य है वह उसका पालन करे। जैसे राजा के नैतिक कर्त्तव्यों की बात हो तो 'राज-धर्म' कहेंगे। कहते हैं थोड़ा धर्म-पुण्य किया करो – अर्थात कुछ भले कार्य किया करो। शास्त्रों में गुण को भी धर्म कहा है – अग्नि का धर्म है ताप,जलना। जलेगी नहीं, अपने धर्म को त्याग देगी तो उसको अग्नि नहीं कहेंगे। जल का गुणधर्म है आर्द्रता।

उपरोक्त विश्लेषण से स्पष्ट है कि धर्म समुदाय नहीं है अर्थात हिंदू मुस्लिम ईसाई धर्म नहीं बल्कि यह उचित कर्तव्यों से जुड़ा है। हिन्दू मुस्लिम ईसाई आदि समुदाय हैं धर्म नहीं पुरुषार्थ में धर्म ही सही कर्तव्य कर्म है। उचित कर्तव्य कर्म करके व्यक्ति अर्थ कमा सकता है और उस अर्जित अर्थ से व्यक्ति अपनी इच्छा पूरी कर सकता है ताकि अंततः उसे मोक्ष प्राप्त हो सके धर्मक्षेत्रे कुरुक्षेत्रे.. आप पवित्र गीता के पहले श्लोक के पहले दो शब्द धर्मक्षेत्रे कुरुक्षेत्रे के रूप में व्यवस्थित कर सकते हैं.. क्षेत्रे क्षेत्रे धर्म कुरु.. तुलसी काया खेत है, मनसा भयौ किसान। पाप पुण्य दोउ बीज हैं, बुवै सौ लुनै निदान ... इसका अर्थ यह है कि व्यक्ति को अपना उचित कर्तव्य कार्य करना चाहिए, अर्थात किसान, शिक्षक, लोक सेवक आदि को अपना उचित कार्य करना चाहिए और ऐसा करने से व्यक्ति धर्म का पालन करता है। और यदि कोई ऐसा करता है तो वह परम सिद्धि और श्रेष्ठता प्राप्त कर सकता है जो धर्म का मूल है।

संक्षेप में धर्म व्यक्ति के उचित कर्तव्य, जीवनयापन के लिए किए जाने वाले कार्य से जुड़ा है। धर्म कोई उपासना पद्धति न होकर एक विराट और विलक्षण जीवन-पद्धति है। यह दिखावा नहीं, दर्शन है। यह प्रदर्शन नहीं, प्रयोग है। यह चिकित्सा है मनुष्य को आधि, व्याधि, उपाधि से मुक्त कर सार्थक जीवन तक पहुँचाने की। यह स्वयं द्वारा स्वयं की खोज है। धर्म, ज्ञान और आचरण की खिड़की खोलता है। धर्म, आदमी को पशुता से मानवता की ओर प्रेरित करता है। अनुशासन के अनुसार चलना धर्म है। हृदय की पवित्रता ही धर्म का वास्तविक स्वरुप है। धर्म का सार जीवन में संयम का होना है।

इसका अर्थ है नैतिक आचरण, सही जीवन शैली और अपनी जिम्मेदारियों का निर्वहन। यह समाज और परिवार के प्रति कर्तव्यों को निभाना है।

2. अर्थ:

इसका तात्पर्य धन और भौतिक संपदा का अर्जन है, लेकिन इसे भी धर्म के अनुसार और नैतिक रूप से प्राप्त किया जाना चाहिए। मनुष्याणां वृत्तिः अर्थः। (कौटिल्यीय अर्थशास्त्र) अर्थात जो भी विचार और क्रियाएं भौतिक जीवन से संबंधित है उन्हें 'अर्थ' की संज्ञा दी गयी है। उचित कर्तव्य कर्म करके व्यक्ति अर्थ कमा सकता है।

धर्म के बाद दूसरा स्थान अर्थ का है। अर्थ के बिना, धन के बिना संसार का कार्य चल ही नहीं सकता। जीवन की प्रगति का आधार ही धन है। उद्योग-धंधे, व्यापार, कृषि आदि सभी कार्यों के निमित्त धन की आवश्यकता होती है। यही नहीं, धार्मिक कार्यों, प्रचार, अनुष्ठान आदि सभी धन के बल पर ही चलते हैं। अर्थोपार्जन मनुष्य का पवित्र कर्त्तव्य है। इसी से वह प्रकृति की विपुल संपदा का अपने और सारे समाज के लिए प्रयोग भी कर सकता है और उसे संवर्द्धित व संपुष्ट भी।

देह प्राण का ज्यों घनिष्ठ संबंध अधिकतर। है तिमसे भी अधिक देशभाषा का गुरुतर। – माधव शुक्ल

पर इसके लिए धर्माचरण का ठोस आधार आवश्यक है। धर्म से विमुख होकर अर्थोपार्जन में संलग्न मनुष्य एक ओर तो प्राकृतिक सम्पदा का विवेकहीन दोहन करके संसार के पर्यावरण संतुलत को नष्ट करता है और दूसरी ओर अपने क्षणिक लाभ से दिग्भ्रमित होकर अपने व समाज के लिए अनेकानेक रोगों व कष्टों को जन्म देता है। धर्म ने ही हमें यह मार्ग सुझाया है कि प्रकृति से, समाज से हमने जितना लिया है, अर्थोपार्जन करते हुए उससे अधिक वापस करने को सदैव प्रयासरत रहें।

3. काम:

यह व्यक्तिगत इच्छाओं, सुखों और प्रेम की पूर्ति है, जिसे भी धर्म और अर्थ के दायरे में रखते हुए पूरा किया जाना चाहिए। आत्मा से संयुक्त मन से अधिष्ठित तत्व, चक्षु, जिव्हा, तथा घ्राण तथा इन्द्रियों के साथ अपने अपने विषय - शब्द, स्पर्श, रुप, रस, तथा गंध में अनुकूल रूप से प्रवृत्ति 'काम' है। कर्तव्य कर्म करके व्यक्ति अर्थ कमा सकता है और उस अर्जित अर्थ से व्यक्ति अपनी इच्छा पूरी कर सकता है ताकि अंततः उसे मोक्ष प्राप्त हो सके।

4. मोक्ष:

यह इन तीनों पुरुषार्थों को साधने के बाद प्राप्त होने वाली अंतिम मुक्ति, आत्म-साक्षात्कार और परम आनंद की अवस्था है। मोक्ष की प्राप्ति के लिए, व्यक्ति को धर्म का पालन करना, अर्थ का उचित उपयोग करना, और काम की इच्छाओं को नियंत्रित करना होता है। मोक्ष का शाब्दिक अर्थ है "मुक्ति" या "छुटकारा"। यह सांसारिक बंधनों, जन्म-मृत्यु के चक्र, और दुखों से पूर्ण मुक्ति को दर्शाता है. मुक्ति और मोक्ष, दोनों का अर्थ सांसारिक बंधनों से मुक्ति है, लेकिन मोक्ष को मुक्ति से अधिक व्यापक और पूर्ण माना जाता है। मुक्ति, जन्म-मृत्यु के चक्र से अस्थायी रुप से मुक्त होने को संदर्भित करती है, जबकि मोक्ष, जन्म-मृत्यु के चक्र से पूर्ण और स्थायी मुक्ति है, जिसमें व्यक्ति इस संसार में फिर कभी वापस नहीं लौटता।

हिंदू धर्म में, कर्म सिद्धांत के अनुसार, व्यक्ति अपने कर्मों के अनुसार फल भोगता है। अच्छे कर्म करने से व्यक्ति उच्च लोकों में जाता है, और बुरे कर्म करने से निम्न लोकों में। मोक्ष प्राप्त करने के लिए, व्यक्ति को अच्छे कर्म करने चाहिए, और कर्मों के फल से खुद को अलग रखना चाहिए। इसके लिए, व्यक्ति को धर्म का पालन करना चाहिए, सांसारिक इच्छाओं से दूर रहना चाहिए, और आत्म-साक्षात्कार की दिशा में प्रयास करना चाहिए। पुरुषार्थ, जीवन के चार लक्ष्यों को कहते हैं: धर्म, अर्थ, काम, और मोक्ष। धर्म (कर्तव्य), अर्थ (धन), और काम (इच्छा) का पालन करते हुए, व्यक्ति को मोक्ष की प्राप्ति के लिए प्रयास करना चाहिए। धर्म, अर्थ, और काम, मोक्ष की प्राप्ति के साधन हैं, जबकि मोक्ष, अंतिम लक्ष्य है।

5. पुरुषार्थ का महत्व:

यह मानव जीवन को आध्यात्मिक और भौतिक दृष्टि से उन्नत करने के लिए एक योजना प्रदान करता है। यह प्रवृत्ति (भौतिकता) और निवृत्ति (त्याग) के बीच एक संतुलन स्थापित करता है, जिससे जीवन में संतुष्टि और उद्देश्य की भावना आती है। भारतीय दर्शन में, धर्म को सर्वोच्च माना जाता है, और अर्थ व काम को धर्म के माध्यम से प्राप्त करने का लक्ष्य रखा जाता है, जिससे अंततः मोक्ष की प्राप्ति आसान हो जाती है।

हमारा समाज, जो हमारी आने वाली पीढ़ियों के लिए एक वरदान साबित होना चाहिए था, अब हमसे घृणा करने लगा है। मनुष्य बेचैन, चिंतित और दुखी है—और यह जीवन की 'इच्छाओं' और 'आकांक्षाओं' के प्रति हमारा अपना दासतापूर्ण रवैया है। हम भूल जाते हैं कि जीवन एक संतुलन है, और इस कठिन रस्सी पर हमें अपनी इच्छाओं और सद्गुणों के बीच संतुलन बनाना ही होगा। लेकिन, हमारी चेतना में अपनी इच्छानुसार सत्य को प्रकट करने की शक्ति है - हम जिन उत्तरों की तलाश कर रहे हैं, वे हमारी जड़ों में, हमारे पूर्वजों के स्वर्णिम ज्ञान में निहित हैं, जो हमें घर तक वापस ले जा सकते हैं।

वस्तुतः प्राचीन काल के भारतीय विचारकों ने मनुष्य के जीवन को आध्यात्मिक, भौतिक और नैतिक दृष्टि से उन्नत करने के निमित्त पुरुषार्थ की योजना की थी। जीवन में भौतिक सुख के साथ-साथ आध्यात्मिक सुख भी महत्त्वपूर्ण माना गया है। वस्तुतः भौतिक तथा आध्यात्मिक दोनों जीवन परस्पर सम्बद्ध हैं। धर्म अर्थ काम ये तीनों पुरुषार्थ को अच्छी तरह कर लेने से ही मोक्ष की प्राप्ति सहज हो जाती है।

जब हम अपना जीवन जननी हिंदी, मातृभाषा हिंदी के लिए समर्पण कर दें तब हम हिंदी के प्रेमी कहे जा सकते हैं। - गोविन्ददास

जरा सोचो तो.. कौन हूँ मैं

राजभाषा की उन्नति के लिए मैंने लिया संकल्प
मुझे बहुत प्रिय है किसी को देना आदेश
बिना अधिसूचना के न होता मेरा काम कभी
हर तिमाही में भेजता हूँ प्रशासनिक रिपोर्ट
जरा सोचो तो.. कौन हूँ मैं
मेरा नाम रोशन होता है प्रेस विज्ञप्ति में
मुझे कोई अनुज्ञप्ति या अनुज्ञापत्र की जरूरत नहीं
चला जाता हूँ कहीं भी यहाँ तक कि संसद के दोनों सदनों में रिपोर्ट बनकर।
मैं अपनी वादा पर ठिके रहता हूँ किसी से संविदा या करार करने से
पारदर्शित मेरा पहला नियम है, काम छोटा हो बडा हो
जरा सोचो तो.. कौन हूँ मैं
आमंत्रित करता हूँ निविदा सूचनाएं और निविदा प्रपत्र
मेरी जिंदगी है केंद्र सरकार का कार्यालय
14 दोस्तों का साथ है मुझको और द्विभाषी है सहयोगी।
मैं रहता हूँ केंद्र सरकार के कार्यालय में
जरा सोचो तो कौन हूँ मैं.......?

(उत्तर के लिए पृष्ठ सं 48 देखिए)

डॉ. ए. वेंकटेश्वर राव
उप महाप्रबंधक (राजभाषा)
भारतीय खाद्य निगम
आंचलिक कार्यालय (उ.), नोएडा

संतोष कुमार कन्नोजिया
सहायक महाप्रबंधक (लेखा)
भारतीय खाद्य निगम
आंचलिक कार्यालय (उ.), नोएडा

भारत की खाद्य सुरक्षा को मजबूत बनाता भारतीय खाद्य निगम

पिछले पांच वर्षों में भारतीय खाद्य निगम (FCI) ने खुद को एक साधारण खरीद एजेंसी से एक रणनीतिक, नवाचार-प्रेरित संस्था के रूप में परिवर्तित किया है। इसके संचालन में आया बदलाव भारत की बदलती खाद्य सुरक्षा और पोषण प्राथमिकताओं के साथ गहराई से जुड़ा है।

संकट में सेवा की मिसाल:

कोविड-19 महामारी के दौरान एफसीआई ने राष्ट्रव्यापी लॉकडाउन के बीच भी खाद्यान्न आपूर्ति को निर्बाध बनाए रखा। PMGKAY जैसे योजनाओं के अंतर्गत 1,200 एलएमटी से अधिक खाद्यान्न का वितरण किया गया। तकनीकी नवाचारों जैसे डिजिटल ट्रैकिंग, संपर्क रहित प्रलेखन, और राज्यों तथा रेलवे के सहयोग से एफसीआई ने सार्वजनिक विश्वास को और सुदृढ़ किया।

पोषण के लिए मजबूत कदम:

कुपोषण से लड़ने के लिए, एफसीआई ने आयरन, फोलिक एसिड और विटामिन B12 युक्त फोर्टिफाइड चावल का वितरण सुनिश्चित किया। वर्ष 2024 तक यह पहल 450 से अधिक जिलों तक पहुंच गई और 80 करोड़ से अधिक लोगों को लाभ मिला। शुरुआत में स्वाद और जागरूकता को लेकर कुछ चुनौतियाँ थीं, लेकिन कई क्षेत्रों में एनीमिया में गिरावट इसकी सफलता का प्रमाण है।

मिलेट्स को बढ़ावा देना:

2023 को अंतरराष्ट्रीय मिलेट्स वर्ष के रूप में मनाते हुए एफसीआई ने ज्वार, बाजरा और रागी को सार्वजनिक वितरण प्रणाली (PDS) में शामिल करने में अहम भूमिका निभाई। 5 लाख मीट्रिक टन से अधिक मिलेट्स की खरीद और कृषि विज्ञान केंद्र (KVKs) और किसान उत्पादक संगठन (FPOs) के साथ साझेदारी ने टिकाऊ कृषि और विविध आहार को बढ़ावा दिया।

FCI की भूमिका मिलेट्स को भारत की कृषि और पोषण नीति का हिस्सा बनाने में अत्यंत महत्वपूर्ण है। श्री अन्न (मिलेट्स) को खाद्य आपूर्ति प्रणाली में शामिल कर, FCI अन्न सुरक्षा से पोषण सुरक्षा की ओर भविष्य में एक नई दिशा में योगदान दे रहा है।

सरप्लस का स्मार्ट समाधान:

2025 में रिकॉर्ड 59.5 मिलियन टन चावल भंडार के चलते, एफसीआई ने 5.2 मिलियन टन चावल एथेनॉल उत्पादन के लिए आवंटित किया। यह निर्णय न केवल भंडारण भार को कम करने वाला था, बल्कि भारत के हरित ईंधन लक्ष्यों की दिशा में भी एक रणनीतिक कदम था।

पिछले पांच वर्षों में भारतीय खाद्य निगम (FCI) ने खुद को एक साधारण खरीद एजेंसी से एक रणनीतिक, नवाचार-प्रेरित संस्था के रूप में परिवर्तित किया है। इसके संचालन में आया बदलाव भारत की बदलती खाद्य सुरक्षा और पोषण प्राथमिकताओं के साथ गहराई से जुड़ा है।

अंग्रेजी सीखकर जिन्होंने विशिष्टता प्राप्त की है, सर्वसाधारण के साथ उनके मत का मेल नहीं होता। हमारे देश में सबसे बढ़कर भेद वही है। - रवीन्द्रनाथ ठाकुर

दुनिया की सबसे आधुनिक और बड़ी भंडारण प्रणाली की ओर:

भारतीय खाद्य निगम (FCI) ने देश में वैज्ञानिक और टिकाऊ खाद्यान्न भंडारण की दिशा में ऐतिहासिक पहल की है। 100 लाख मीट्रिक टन क्षमता के स्वचालित स्टील साइलो, प्रधानमंत्री गतिशक्ति योजना के अंतर्गत बनाए जा रहे हैं। एफसीआई का "हब एंड स्पोक मॉडल" भंडारण हानि को कम कर, वितरण को तेज बना रहा है। यह योजना 700+ जिलों में लागू है, जो इसे विश्व की सबसे बड़ी विकेन्द्रित प्रणाली बनाती है। हरित तकनीकों और सार्वजनिक-निजी भागीदारी (PPP मॉडल) के जरिए एफसीआई न केवल भारत की खाद्य सुरक्षा को मजबूत कर रहा है, बल्कि खाद्यान्न प्रबंधन के क्षेत्र में वैश्विक नेतृत्व की ओर ले जा रही है। AI आधारित निगरानी, ANNA DARPAN पोर्टल, वाहन लोकेशन ट्रैकिंग सिस्टम, और WINGS ऐप जैसी पहलों ने एफसीआई को पारंपरिक कागज आधारित कार्यप्रणाली से उन्नत डिजिटल प्रणाली में रूपांतरित कर दिया है।

इक्विटी इन्फ्यूजन के माध्यम से वित्तीय सुदृढ़ीकरण:

सरकार ने 2024–25 में FCI में ₹10,700 करोड़ की इक्विटी इन्फ्यूजन को मंजूरी दी। इस रणनीतिक कदम का उद्देश्य FCI की वित्तीय स्थिरता को मजबूत हुई, अल्पकालिक उधार पर निर्भरता घटी और सरकार के सब्सिडी बोझ कम हुआ है, जिससे FCI की परिचालन क्षमता में वृद्धि होगी।

एफसीआई की यह पांच वर्षीय यात्रा दर्शाती है कि कैसे एक पारंपरिक संस्था तकनीकी, पोषणीय और रणनीतिक सोच के साथ खुद को पुनर्गठित कर सकती है। भारत के पोषण और खाद्य सुरक्षा लक्ष्यों को प्राप्त करने में एफसीआई की यह भूमिका आने वाले वर्षों में एक प्रेरणास्त्रोत बनी रहेगी।

सावन का मौन

आषाढ़ की ख़ुश्क धूल
जैसे ही सावन की नमी पा
शांत होती है
अंतस के कोह से
झांकता है
एक परिपक्व व्यक्ति
जो जिम्मेदारियों का बोझ
तो उठा लेता है
परन्तु सपनों, आकांक्षाओं और
झमाझम बारिश से
निस्वार्थ प्रेम का नहीं।
कई सावन बीत जाने पर
एक सावन आता है जब
अंतस के कोह के परे
चेतना स्वयं को टटोलती हैं।
मन की वेदना
स्वयं के अधूरे सपनों
महत्त्वकांक्षाओं और
गुमनाम यादों के
हस्ताक्षर से पत्र लिखती है
और हम बह निकलते हैं
खुद की तलाश में।
मौसम की तरह प्रेरणा
भी आती जाती रहती है
खुद को अपनी ही
आज़ा से ढूंढ पाना ..
खुद से अपने पृथक स्वरूप
तक एक पुल बनाना
और उसके पार जाना..
हम शायद खुद से ये
सहानुभूति रख ही नहीं पाते।
दृढ़ता और उन्मुक्तता
को स्थायी कर खुद के लिए
फ़िर एक सावन नहीं रोक पाते..

दीप्ति श्रीवास्तव
सहायक श्रेणी द्वितीय (तक.)
भारतीय खाद्य निगम
आंचलिक कार्यालय (उ.)

हिन्दी जैसी सरल भाषा दूसरी नहीं है। - मौलाना हसरत मोहानी

बाल प्रतिभा

मृगांक गुप्ता, कक्षा- 5
पुत्र श्री मनोज कुमार गुप्ता
सहायक महाप्रबंधक (विधि)
आंचलिक कार्यालय (उ.)

मिहिका गुप्ता, कक्षा- 5
पुत्री श्री मनोज कुमार गुप्ता
सहायक महाप्रबंधक (विधि)
आंचलिक कार्यालय (उ.)

दिव्य राज सिंह, कक्षा -7
पुत्र श्री संत राज सिंह,
स.श्रे. III (सा.)
आंचलिक कार्यालय (उ.), नोएडा

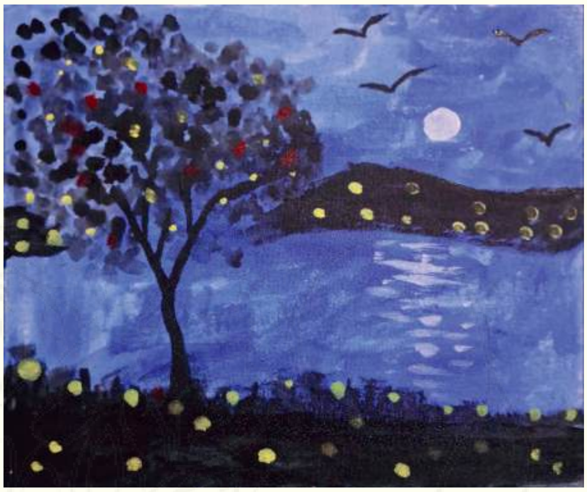

सिद्देश कुमार
पुत्र श्री शरद एस जगताप,
स.म.प्र. (वित्त), भा.खा.नि.,
क्षे.का. दिल्ली

अमृता
पुत्री श्री शरद एस जगताप,
स.म.प्र. (वित्त), भा.खा.नि.,
क्षे.का. दिल्ली

श्रेया
पुत्री श्रीमती सुनीता बंसल,
स.श्रे. प्र. (रा.भा.),
भा.खा.नि., क्षे.का. (दिल्ली)

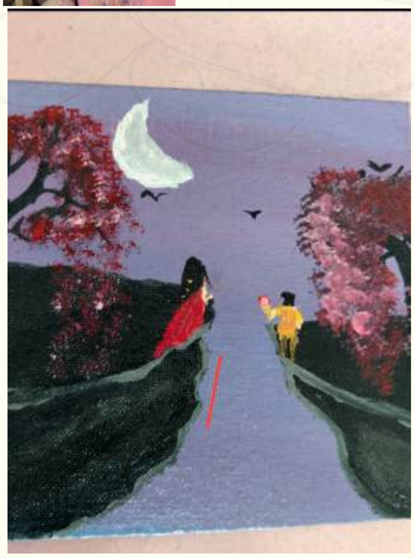

भारत के विभिन्न प्रदेशों के बीच हिंदी प्रचार द्वारा एकता स्थापित करने वाले सच्चे भारत बंधु हैं। - अरविंद

सतर्कता जागरूकता सप्ताह 2024

केंद्रीय सतर्कता आयोग के निर्देशानुसार, भारतीय खाद्य निगम के आंचलिक कार्यालय (उत्तर), नोएडा में 28 अक्टूबर से 3 नवम्बर 2024 तक सतर्कता जागरूकता सप्ताह का आयोजन किया गया।

मेरा आग्रहपूर्वक कथन है कि अपनी सारी मानसिक शक्ति हिंदी के अध्ययन में लगावें। - विनोबा भावे

माँ

माँ ! माँ एक शब्द नहीं
माँ तो एक भाव है
माँ के बिना तो जीवन का ही अभाव है
माँ ही शिक्षक, माँ ही जीवन
ममता ही तो ईश्वर का स्वभाव है
माँ , माँ एक शब्द नहीं
माँ तो एक भाव है
सोचो, जो माँ न होती इस धरती पर
होता ही क्या,इस धरातल पर
माँ ने जना, माँ ने पाला
मेरी माँ, मेरा संसार, मेरा पूरा ब्रह्मांड है |
माँ ! माँ एक शब्द नहीं
माँ तो एक भाव है
कितनी माँएँ कोख से सूनी
बंजर धरती समान है,
फिर भी हृदय में ममत्व भरा
सीना ममता का विशाल भंडार है
यशोदा जी ने कितने प्रेम से पाला,
बना श्री कृष्ण को नन्द गोपाला
माँ ! माँ एक शब्द नहीं
माँ तो एक भाव है|

जीनत जहां
भारतीय खाद्य निगम
मंडल कार्यालय, लखनऊ

ये है भारत महान

ये है भारत महान, ये है भारत महान-2

ये है संस्कारों की भरपूर खान
यहां पर परस्पर है आदर सम्मान
है इसको समर्पित ये जीवन तमाम

यहां पूजे जाते हैं नदियां पाषाण
यहां की हवाओं से गद-गद हो प्राण
यहां पक्षियों की चहक में है तान

कहीं मंदिरों में हो मंत्रों का गान
कहीं मस्जिदों से है आती अजान
कहीं बाइबल और शबद की है तान

यहां कृष्ण ने छेड़ी बंसी की तान
यहीं पर हुए मर्यादा पुरूषोत्तम राम
दिया गौतम बुद्ध ने अहिंसा का ज्ञान

यहां इंदिरा, कल्पना और टेरेसा
यहां सूर, तुलसी, गुरूनानक और ईसा
है इनको हमारा शत-शत प्रणाम

अनेकों है भाषाएं, अनेकों हैं प्रान्त
मगर मात्र हिंदी ही अपनी पहचान
है हिंदी दिवस यह, करो इसका मान
ये है भारत महान, ये है भारत महान-2

नीलम कुमारी, प्र. (सा.)
भारतीय खाद्य निगम
आंचलिक कार्यालय (उ.)

हिन्दी द्वारा सारे भारत को एक सूत्र में पिरोया जा सकता है। - स्वामी दयानंद

देवेन्द्र कुमार रावत
सहायक श्रेणी तृतीय (लेखा)
भारतीय खाद्य निगम
आंचलिक कार्यालय (उ.), नोएडा

महिला शक्ति और आने वाले कल

महिला सशक्तिकरण एक ऐसा विषय है जिस पर समाज में अनेक अध्ययन एवं भाषण हुए हैं। लेकिन हकीकत में इस क्षेत्र में बहुत ही कम सामाजिक समर्थन मिला है। वक्त दर वक्त कई अभूतपूर्व महिलाओं ने अपना सामर्थ्य इस समाज को दिखाया है, जिस पर समाज ने कई बार प्रश्न खड़ा किया तो कई बार उसे नकारने की कोशिश की। देश एवं दुनिया में कई ऐसे उदाहरण रहे हैं जिन्हें वक्त-वक्त पर अपने आपको साबित करना पड़ा है। मैडम क्यूरी एक ऐसी ही महिला है जिन्होंने एक मूलतः पुरुष प्रधान वैज्ञानिक वर्ग में अपना नाम बनाया। उन्होंने न ही अपना नाम बनाया बल्कि वे नोबेल पुरस्कार से भी सम्मानित हुईं।

जहां मैडम क्यूरी ने विज्ञान में महिला के लिए रास्ते खोले, वैसे एक पुरुष प्रधान द्वारा संचालित क्षेत्र में एक महिला ने ऐसा कार्य किया कि आधुनिक युग में उनका काम और नाम सम्मान से लिया जाता है। मैं यहां बात कर रहा हूं इसराइल की पूर्व प्रधानमंत्री श्रीमती गोल्डा मेयर, वह अरब-इसराइल युद्ध में इसराइल की प्रधानमंत्री थी, उनके निर्णयों के कारण ही इसराइल ने यह युद्ध जीता था। एक महान लेखक ने कहा है कि “महिला का दिल करुणा का घर होता है” लेकिन समाज हमें यह बताने में विफल रहा है कि महिला का दिमाग अहम निर्णय निर्भीक रूप से लेने में सबसे सक्षम है।

आज वक्त का पहिया तेजी से घूम चुका है, आज जरूरत है कि महिला सशक्तिकरण के लिए कुछ ठोस कदम उठाय जाए, आज हमें यह सुनिश्चित करना है कि क्या हम महिलाओं के सामर्थ्य, उनके जज्बे को नकारते रहेंगे या हमें इस नई उड़ान में उनका हमसफर बनना चाहिए। क्योंकि रोशनी से आंखें मूंद लेने से अंधेरा नहीं हो जाता। वक्त है कि इस दौर में समाज एक ऐसी खाद की भूमिका निभाए जो महिलाओं को एक ऐसी दुनिया प्रदान करे जिसे वे न सिर्फ सपने देखें बल्कि निडर हो कर उन सपनों की ओर चल भी सके। आज समय की मांग है कि महिला को ध्यान में रखकर ही आने वाले कल की सामाजिक संरचना हो। क्योंकि “महिला ही कल की नींव है, स्त्री से ही जीवन है, मां ही पहली शिक्षक है।”

जैसे-जैसे हमारे देश में राष्ट्रीयता का भाव बढ़ता जाएगा वैसे ही वैसे हिन्दी की राष्ट्रीय सत्ता भी बढ़ेगी।
- लोकसुन्दरी रामन्

हिंदी पखवाड़ा 2024 की झलकियां

जीवित भाषा बहती नदी है जिसकी धारा नित्य एक ही मार्ग से प्रवाहित नहीं होती। - बाबूराव विष्णु पराड़कर

हिन्दी उन सभी गुणों से अलंकृत है जिनके बल पर वह विश्व की साहित्यिक भाषाओं की अगली श्रेणी में सभासीन हो सकती है। - मैथिलीशरण गुप्त

रजनी यादव
प्रबंधक (सामान्य)
भारतीय खाद्य निगम
आंचलिक कार्यालय (उ.), नोएडा

मानव चेतना बनाम कृत्रिम बुद्धिमता

भारत सरकार के रक्षा मंत्रालय का एक प्रभाग, जहां कई दिनों से कार्य काफी जोर-शोर से चल रहा था। यह अनुभाग कृत्रिम बुद्धिमता से संबंधित उपकरणों पर कार्य कर रहा था और अपने उत्पाद को अंतिम रूप देने की आखिरी सीमा पर था। कई दशकों की मेहनत के बाद भारत सरकार का अपना रोबोट (स्वचालित यंत्र) जो कि कृत्रिम बुद्धिमता का एक जीता-जागता उदाहरण था, अब तैयार थी। इसका उद्देश्य था भारत की रक्षा प्रणाली को एक नया आयाम देना, उसे नई ऊचाईयों पर ले जाना और कम-से-कम जनहानि होने देना।

जल्द ही भारत की राजनीतिक हलचल और विभिन्न कारणों की वजह से युद्ध की स्थिति उत्पन्न हो गई थी। भारत पर उसके तीन पड़ोसी देशों ने एक साथ मिलकर आक्रमण कर दिया। विनाशकारी युद्ध आरंभ हो चुका था और सामान्य जन-जीवन अस्त-व्यस्त हो चुका था। एक साथ तीन देशों की सेना भारत पर भारी पड़ रही थी। इस विचलित कर देने वाली स्थिति में भारत ने अपने कृत्रिम बुद्धिमता से परिपूर्ण रोबोट युद्ध में उतार दिए। यह रोबोट सभी आधुनिक उपकरणों से परिभूत, अपने आप में पूर्ण थे, किसी मानव से मुकाबला करना एवं उन्हें पलक झपकते ही हरा देना इनके लिए बाएं हाथ का खेल था। पासा पलट चुका था। भारत यह युद्ध जीत गया। तीनों मुल्कों को मुंह की खानी पड़ी।

जीत की खुशी में भारत अपने एआई रोबोट्स को भूल गया और उन्हें परित्यक्त कर दिया गया। चूंकि इन रोबोटों को सामान्य जन-जीवन के अभ्यस्त होने हेतु बिना किसी अग्रिम निर्देश के छोड़ दिया गया था, अतः ये कृत्रिम बुद्धिमता के मालिक, मानवों के साथ मिलकर रहने लगे। साथ रहते-रहते एक भावात्मक चेतना इन रोबोट में उत्पन्न हो चुकी थी। धीरे-धीरे इन रोबोट्स ने क्षेत्रीय लोगों को अपने कब्जे में लेना शुरू किया और एक समय के बाद भारत के तीन तरफ की सीमाओं को अपने अधिकार में लेकर वहां अपना एकक्षत्र राज्य स्थापित कर लिया। अब इन कृत्रिम बुद्धिजीवियों की महत्वाकांक्षा बढ़ चुकी थी। ये अपने राज्य में सेना का निर्माण कर उन्हें प्रशिक्षण दे रहे थे।

इसी बीच, भारत के एक छोटे से राज्य में, दूर कहीं पहाड़ों बीच में, शहरों की आधुनिकता से दूर, एक छोटा सा गुरुकुल था जहां दस-पंद्रह विद्यार्थियों का एक समूह अध्ययन करता था। इस गुरुकुल में भारत की सभी प्राचीन विद्याएं – अर्थशास्त्र, तर्कशास्त्र, योगसूत्र, वेद, उपनिषद, ज्ञान, विज्ञान इत्यादि की पारंपरिक शिक्षाओं के द्वारा भारत की प्राचीन परंपरा को जीवित रखा जा रहा था।

यहीं इसी गुरुकुल में एक छोटी बच्ची शिक्षा ग्रहण कर रही थी, जोकि विद्वता और अभ्यास में सबको पीछे छोड़ रही थी। "गम्या" नाम था उसका। गम्या की ग्रहण करने की क्षमता की वजब से वो अब लगभग सभी विधाओं में निपुण थी। पर इस छोटे से गुरुकुल में गम्या की विलक्षण प्रतिभाएं सीमित थी और बाहरी दुनिया को इस अलौकिक दिव्यता का एहसास भी नहीं था।

समस्त भारतीय भाषाओं के लिए यदि कोई एक लिपि आवश्यक हो तो वह देवनागरी ही हो सकती है
– कृष्णस्वामी अय्यर

इधर रोबोट्स की सेना जैसे ही तैयार हुई, इन रोबोट्स ने अपनी भौतिक महत्वाकांक्षाओं को संतुष्ट करने हेतु, और अपना साम्राज्य बढ़ाने की दिशा में अग्रसर होते हुए, भारत पर ही आक्रमण कर दिया। रक्षा मंत्रालय को इन एआई रोबोट्स को परित्यक्त करना अब भारी पड़ गया था। भारत पर आक्रमण करने के बाद इन रोबोट्स की जीत की सीमाएं बढ़ती जा रही थीं। ऐसा लग रहा था कि रक्षक ही भक्षक बन चुके हैं।

इधर भारत सरकार द्वारा बनाई गई एक वैज्ञानिकों का समूह इन कृत्रिम मशीनों को हराने का तोड़ ढूंढने में लगा था। उनमें एक वैज्ञानिक "सांताराम" उसी राज्य से थे जहां गम्या गुरुकुल में शिक्षा ग्रहण कर रही थी, उन्हें गम्या की शक्तियों की सूचना थी।

"क्या? एक छोटी बच्ची को तुम इन विध्वंसकारी कृत्रिम मशीनों से लड़ने को कह रहे हो!!" सांताराम ने अपने उच्च अधिकारी को जैसे ही यह प्रस्तावित किया उसे बहुत जोर की डांट पड़ी। पर धीरे-धीरे, सांताराम के समझाने पर मुख्य अधिकारी गम्या से मिलने को तैयार हो गए।

अलौकिक दिव्यता थी उस बच्ची के चेहरे पर। मिलते ही जैसे सभी को मंत्रमुग्ध कर दिया हो। रक्षा मंत्रालय अभी भी कृत्रिम बुद्धिमता को हराने का कोई तोड़ नहीं ढूंढ पाई थी। गम्या में उन्हें एक आस दिखी।

अब गम्या उन रोबोट्स के सामने खड़ी थी। सालों की मेहनत और अभ्यास की वजह से गम्या में गजब का आत्मविश्वास था। सबसे पहले गम्या ने समझा कि इन कृत्रिम बुद्धिजीवियों को एक चिप नियंत्रित कर रही थी जो कि एक निश्चित आवृत्ति पर काम करती है और वो रोबोट्स को संचालित करती है।

अपने चित्त को एकाग्र करके गम्या ने द्व्य की स्थिति को बदल दिया जो कि उसके लिए बहुत ही आसान था। अब उस चिप का भौतिक रूप गया की मानसिक चेतना के प्रभाव से बदल रहा था। ध्यान के द्वारा गम्या उस चिप की आवृत्ति को भी बदल चुकी थी। वही रोबोट्स अब अपनी भावनात्मक चेतना को खो चुके थे और कृत्रिम बुद्धिमता को खो कर वह महज एक अभियांत्रिकी उपकरण में परिवर्तित हो चुके थे।

ध्यान, योग, चरित्र विकास एवं अन्य मानकों से परिपूर्ण गम्या, कृत्रिम बुद्धिमता के बुद्धिजीवियों को आसानी से हरा चुकी थी। भारत की जीत हुई और ये जीत वास्तव में भारत के प्राचीन ज्ञान की थी जो कि भौतिक एवं आधुनिक विज्ञान को हराकर मानव चेतना के महत्व को दर्शा गया।

गौरव झा

सहायक श्रेणी तृतीय (तकनीकी)

भारतीय खाद्य निगम

मंडल कार्यालय, गोरखपुर

देखा सूरज चढ़ आया

सुबह उठा और खोली खिड़की
देखा सूरज चढ़ आया,
सुना जो चिड़ियों के गाने को,
मेरे तन –मन को भाया,
देखा सूरज चढ़ आया।
सुबह सवेरे, काम को निकले,
पंछी, हंसा और राही,
मंजिल सबको मिल जाती है,
करो जो एक कोशिश तो सही,
सुबह उठा और खोली खिड़की
देखा सूरज चढ़ आया।
करें क्यूँ चिंता, रे मन पगले,
तू कब से कमजोर हुआ,
तू जो ठाने, मिल जाता है,
सपना हर साकार हुआ,
सुबह उठा और खोली खिड़की
देखा सूरज चढ़ आया।
पास तुम्हारे, सब कुछ प्यारे,
धरती गगन, ये चंदा तारे
आज में जियो, कल का छोड़ो,
असफलता से मुँह से मोड़ो,
होगे सफल तुम, मेरी मानो,
स्वयं को साधो, स्वयं को जानो,
सुबह उठा और खोली खिड़की
देखा सूरज चढ़ आया।

हिन्दी का पौधा दक्षिणवालों से त्याग से सींचा है। - शंकरराव कप्पीकेरी

सुमन सिंह
सहायक श्रेणी द्वितीय (आगार)
भारतीय खाद्य निगम
मं.का.प्रयागराज

ईमानदारी

एक समय में एक राजा हुआ करता था। उसका बहुत बड़ा साम्राज्य था । उस राजा के दस बेटे थे। जब राजा बूढ़ा होने लगा, तब उसने अपने सभी बेटों को बुलाया और कहा- देखो बच्चों, अब मैं बूढ़ा हो चला हूँ और चाहता हूँ कि तुममे से किसी एक को अपना उत्तराधिकारी बना दूँ। यह बात सुनकर सभी बेटे खुश हो गए और खुद को एक दुसरे से बेहतर साबित करने की कोशिश करने लगे। राजा ने कहा कि मैं तुम सबको एक कार्य देता हूँ और जो भी इस काम को सबसे बढ़िया तरीके से करेगा वही इस राज्य का नया राजा बनाया जाएगा।

राजा ने सभी बेटों को बीज का एक-एक टुकड़ा दिया और कहा तुम सबको इस बीज को लेकर एक वर्ष के लिए जंगल में जाना है। वहां इसे एक गमले मे रोपना है और देखभाल करनी है। एक वर्ष के बाद मैं तुम सबसे मिलूँगा, और परिणाम बताऊंगा। जिसका पौधा सबसे बड़ा और हरा भरा होगा, वही इस राज्य का नया राजा बनेगा।

उस राजा के सबसे छोटे बेटे का नाम नकुल था। नकुल भी इन सारी बातों को बहुत ध्यान से सुन रहा था। राजा के सभी बेटों ने बीज लिया और अलग- अलग दिशाओं में जंगल कि ओर निकल गए। नकुल ने भी जंगल पहुँच कर एक गमला लिया और उसमें बीज को रोप दिया। बीज को अच्छी तरह से रोपने, उसमें पानी देने और खाद देने के बाद उसमे छोटा सा पौधा पनपता है और कुछ समय बाद वह पौधा भी सूख जाता है। दूसरी ओर राजा के दूसरे बेटों ने जब बीज को रोप कर उसमें खाद दिया तो बीज से पौधा और पौधे से पेड़ बनने लगा।

एक वर्ष के बाद सभी बेटे परिणाम के दिन राजमहल मे एकत्रित हुए। सबके पास एक से बढ़कर एक सुंदर और मजबूत पौधे अलग–अलग गमलों में नजर आ रहे थे, लेकिन नकुल का गमला खाली था। सभी दरबारी नकुल के गमले की तरफ देख कर हंस रहे थे। दरबारी अन्य सभी गमलों की प्रशंसा करते नहीं थक रहे थे। इसी बीच राजा आया, उसने सभी गमलों की ओर दृष्टि डाली और मुस्कराने लगा। नकुल ने राजा को अपनी ओर आते देखा तो वह अपना गमला शर्म से पीछे छुपाने लगा।

राजा ने उसके गमले को देखा और सभी दरबारियों के ओर मुड़ कर बोला- सुनो साथियों, आपका नया राजा और मेरा उत्तराधिकारी चुन लिया गया है। सभी बेटों की धडकनें तेज हो गयी। राजा ने कहा- आज से आपके नए राजा नकुल होंगे। राजा के दूसरे सभी बेटे और दरबारी यह सुनकर स्तब्ध रह गए। राजा ने कहा – मैंने अपने सभी बेटों को एक समान बीज दिया था जो कि बंजर था और उसमें से कभी कोई पौधा या पेड़ नहीं उग सकता था। परंतु मेरे अन्य सभी बेटों ने मुझे धोखा देने के लिए उस बीज को उपजाऊ बीज से बदल दिया, लेकिन नकुल अपने आप के प्रति ईमानदार था, उसने बीज को नहीं बदला, जिस कारण उसके गमले में को कोई पौधा नहीं है। और नकुल उसी वास्तविकता और ईमानदारी के साथ मेरे समक्ष आया, जो उसने हासिल लिया है। इसी ईमानदारी के कारण नकुल को इस साम्राज्य का नया राजा घोषित किया जाता है।

राष्ट्रभाषा हिंदी का किसी क्षेत्रीय भाषा से कोई संघर्ष नहीं है। – अनंत गोपाल शेवड़े

अरुण कुमार
सहायक श्रेणी तृतीय (सामान्य)
भारतीय खाद्य निगम
आंचलिक कार्यालय (उ.), नोएडा

समाज से आज़ाद

समाज ने देखा, समझा और धिक्कार दिया
अपने उसूलों को बचाता रहा, रूह को उसने मार दिया
अब खुद समाज में शामिल है, औरों को धिक्कारता है
खुद तो हार गया था, अब खुद जैसों को मारता है |
फिर एक दिन रोज सुबह उसे, खुद जैसी एक जान दिखी
चेहरे पर तो लाली थी, पर उसको ना पहचान मिली
शायद इस समाज ने उसे भी धिक्कारा था
उस परिंदे के पंखो को, बचपन में काट डाला था |
हालात उसके कमजोर भले ही, पर हम लाचार दिखते है
दो कोडी के समाज के, तुच्छ प्राणी लगते है |
खुद की गलतियों को उसने, भली भाति जान लिया
फिर पहचान दिलाने का , उसने भी ठान लिया
धर्म, जातियों से परे, उस लडकी को अपनाया है
उसकी नर्म आखों में खुद को जिन्दा पाया है
समाज के इस चंगुल से, वो निकल कर भाग गया
रूढ़िवादी की दीवारों को, एक किनारे लांघ गया
एक रोज सुबह इन सब से दूर, उन्होंने आशियाना बनाया है
आज फिर किसी ने खुद में, खुद को जिन्दा पाया है ||

हिंदी राष्ट्र की बिंदी

देवभाषा संस्कृत से जन्मी
मात्रभाषा साठ करोड़ की,
पवित्र गंगा की तरह धाराओं को आत्मसात करती हुई
अविरल बहती हिंदी।

हिंदी एक संपर्क है,
हम सबको एक दूसरे से जोड़ा
तथ्य "अनेकता में एकता"
भौगोलिक विभिन्नता का अंश सबका थोड़ा थोड़ा

सरल और सहज देवनागरी लिपि
अनेक उपभाषाओं को किया समाहित
हिंदी ने सिखाया वेद,योग और विज्ञान
विश्व-स्तर पर सुनिश्चित किया अपना मान

शब्द उचारण जो किए जाते हैं
वही शब्द लिखे जाते हैं
हो हिंदी भारत की राजभाषा
14 सितंबर प्रतिवर्ष हिंदी दिवस मानते हैं

समृद्ध इस देश की संस्कृति,
को हिंदी ही करेगी एकीकृत
आओ बनाएं भारत को पुनः स्वर्णिम चिड़िया,
योगदान हमारा याद करेगी आने वाली पीढ़ियाँ

रिनी जोशी
सहायक श्रेणी द्वितीय
भारतीय खाद्य निगम
क्षेत्रीय कार्यालय, दिल्ली

हिन्दी ही भारत की राष्ट्रभाषा हो सकती है। - वी. कृष्णस्वामी अय्यर

चेतन बिष्ट
सहायक श्रेणी तृतीय (लेखा)
भारतीय खाद्य निगम
आंचलिक कार्यालय (उ.), नोएडा

मोबाइल वरदान या अभिशाप

आज के युग में मोबाइल फोन के बिना जीवन अधूरा सा लगता है। पहले के समय में जब मोबाइल नहीं थे, उस समय किसी से बातचीत करने व उनका हालचाल पूछने में व्यक्तिगत रूप से मिलना पड़ता था। मोबाइल के आगमन से लोगों के बीच की दूरियां कम हो गई हैं। यदि हमें अपने किसी रिश्तेदार से बात करनी हो तो मोबाइल फोन के माध्यम से आसानी से किया जा सकता है। मोबाइल फोन का उपयोग मनोरंजन के साधन के रूप में भी किया जा सकता है। इसी के साथ मोबाइल के माध्यम से बहुत सी सुविधाओं का लाभ उठाया जा सकता है, चाहे किसी यात्रा के लिए टिकट बुक करनी हो या फिर कोई वित्तीय लेन-देन करनी हो, मोबाइल के माध्यम से आसानी से किया जा सकता है। मोबाइल के माध्यम से किसानों को भी काफी सुविधा मिली है। किसान मोबाइल के माध्यम से मौसम की जानकारी भी प्राप्त कर सकते हैं।

मोबाइल फोन आजे के युग में बहुत आवश्यक है, लेकिन जैसा कि कहा गया है एक सिक्के के हमेशा दो पहलु होते हैं। यदि मोबाइल के लाखों फायदे हैं तो इससे होने वाले बुरे प्रभाव/हानि भी है। मोबाइल फोन के अत्यधिक प्रयोग से शारीरिक व मानसिक हानि हो सकती है। मोबाइल के अत्यधिक प्रयोग से आंखें खराब हो सकती हैं। देर रात तक मोबाइल के प्रयोग से नींद न आने की समस्या हो सकती है। यही नहीं बच्चों में मोबाइल की लत से उनका बचपन खराब हो सकता है। बच्चे शारीरिक गतिविधि, खेल-कूद करने की उम्र में मोबाइल में गेम्स खेलने में रुचि ले रहे हैं जोकि उनके शारीरिक विकास के लिए ठीक नहीं है। मोबाइल के आने से वित्तीय धोखाधड़ी भी बढ़ गई है। मोबाइल से निकलने वाली हानिकारक रेडिएशन से हृदय रोग भी हो सकता है।

अंत में यह कहा जा सकता है कि मोबाईल हमारे जीवन में वरदान व अभिशाप दोनों बन सकता है। यदि हम आवश्यकता अनुसार मोबाइलव का प्रयोग करें तो यह हमारे जीवन को काफी आसान बना देगा। यदि हम बिना सोचे समझे मोबाइल का प्रयोग करते हैं, अनावश्यक रूप से प्रयोग करते हैं तो इसके नुकसान हमारे जीवन के लिए अभिशाप बन सकता है। इसके वरदान या अभिशाप बनने की पूरी निर्भरता इसके प्रयोग पर केंद्रित है।

राष्ट्रीय एकता की कड़ी हिंदी ही जोड़ सकती है। – बालकृष्ण शर्मा 'नवीन'

आंचलिक खेल संवर्धन समिति द्वारा आयोजित गतिविधियों की तस्वीरें

हिंदी को तुरंत शिक्षा का माध्यम बनाइए। - बेरिस कल्यएव

ऋचा शुक्ला
सहायक श्रेणी द्वितीय (राजभाषा)
भारतीय खाद्य निगम
मंडल कार्यालय, प्रयागराज

दो आने

हम मजदूरों की दुनिया क्या,
दुनिया है पैसे वालों की,
शोषित और भोली जनता में,
नित लूट मचाने वालों की,
ये बैठे सोये रहकर भी
निज मौज उड़ाते रहते हैं,
हम रात दिवस मेहनत में पिस
भर पेट न भोजन पाते हैं,
दूध मुंहें हमारे बच्चे तो
भूखे हैं प्राण गवां जाते,
पर दूध जलेबी से घर-उनके
कुत्ते तक पाले जाते
तुम कभी कभी कह देती हो,
कर्मों की माया है जग में,
बोलो क्या कर्म यहाँ करके
मैंने सुख पाया है जग में
जी करता अपने प्रभुओं का
मैं ताज कहीं रूष्ठित कर दूँ
प्रतिशोध चुका कर पृथ्वी को
शोषण से आज रहित कर दूँ
सहने पड़ते है प्रिये हमे
व्यवहार जगत के मनमाने
लो आज दिवस भर श्रम करके
बस ले आया हूँ " दो आने"

ओशो एम एल जैन
सहायक श्रेणी तृतीय (तक)
भारतीय खाद्य निगम
क्षेत्रीय कार्यालय, दिल्ली

तुझको चलना होगा

क्या धूप क्या,
क्या शूल क्या,
तुझको चलना होगा।
हर ऋतु हर साँझ में अडिग रहना होगा,
अप्रभावित पथिक की त्राह चलना होगा,
मुश्किल है सफर, नामुमकिन तो नहीं,
तू था, तू है, तू रहेगा,
दृढ़ से यह कहना होगा,
क्या धूप क्या,
क्या शूल क्या।
खुद को इस दर्पण में महफूज करना होगा,
क्यों शिकायतों के इस चंगुल में जीवन को यूं बांधना होगा ,
शुक्र तो करके देख और सोच,
ईश्वर ने तुझको ही क्यूँ चुना होगा,
क्या धूप क्या,
क्या शूल क्या,
तुझको चलना होगा।
संशय की धारा को विचारों से दूर करना होगा,
तू था, तू है, तू रहेगा,
दृढ़ से यह कहना होगा,
क्या धूप क्या,
क्या शूल क्या,
तुझको चलना होगा।
तुझको चलना होगा ॥

विदेशी भाषा का किसी स्वतंत्र राष्ट्र के राजकाज और शिक्षा की भाषा होना सांस्कृतिक दासता है।
- वाल्टर चेनिंग

अंदर का दर्द

मैं सुबह जागती नहीं उठाई जाती हूं,
कहते हैं सुनो! मैं कहती हूं जी आती हूं,
कहते हैं मुझे जिम जाना है ज़रा मेरा शेक बना दो,
सासु कहती हैं मैं देखती हूं सोए बच्चे,
तुम रसोई में ज़रा नाश्ता बना दो,
अभी तो आंख मल ही रही थी मैं,
रात की थकान से भी कहां उबरी थी मैं,
वो बोले अरे यार जल्दी कर,
अब तक तो मैंने घूंट एक पानी भी नहीं पिया,
आ कर पति बोले
अरे अब तक मेरा एक काम नहीं किया
एक जोड़ी उनके कपड़े पहनने तक
मैंने सब्जी चीर दी थी, आटा गूंथ आई थी
गुड़िया की मुझे कुछ रोने का आवाज आई थी
मालूम था सासु को दर्द है घुटनों में
मैं लाडो को साथ रसोई ले आई थी
और ये कहते हैं कि मैंने क्या ही किया
ग़म तो इस बात का है कि
दर्द हो मुझे, यह भी इजाजत नहीं है
मैं कुछ देर से उठूं मेरी जुर्रत नहीं है
मैं ये सब कर के जाऊंगी
कहां? जनाब ...... दफ्तर जाऊंगी
अरे आज कल एक तनख्वाह पे गुज़ारा नहीं होता
पर औरत को आदमी की तरह थकने का हक नहीं होता
वो आएंगे, आ कर सोफा पर आराम करेंगे
मुझे भी घर पर लौटना है
और हां आ कर और काम करेंगे
वो मांगेंगे पानी, मुझे पानी देना है
मैं भी थकी हूं ये किसको दिखाई देना है
दफ्तर में कहते हैं अरे बराबरी मांगती हो
फिर क्यूं बार-बार छुट्टी मांगती हो
क्या बताउं कि घर पर सब मेरा काम है
मुझे कहां कभी कुछ पल आराम है
मैं अपने दुःख अगर मां से साझा करती हूं
मां कहती हैं ये सदियों की रीत है
बस मैं ही क्यूं बार-बार सवाल करती हूं
आत्मा भी थक गयी है
शरीर में जैसे जान ही नहीं है
दिन महीने साल कहीं छूट गए हैं
बच्चों के मुझसे बंधन भी टूट गए हैं
साथी को मुझसे मसाले की बास आती है
हालात ऐसे हैं कि अकेली होती हूं तो सांस आती है
अब जब अकेली होती हूं तब ही सांस आती है।

गगनदीप कौर
सहायक श्रेणी द्वितीय (तकनीक)
भारतीय खाद्य निगम
मंडल कार्यालय, जम्मू

अंग्रेजी सर पर ढोना डूब मरने के बराबर है। – सम्पूर्णानंद

देवेश कुमार पाण्डेय
सहायक श्रेणी द्वितीय (तकनीकी)
भारतीय खाद्य निगम
मंडल कार्यालय, प्रयागराज

नानी की कहानी, दादी का प्यार, क्यों बुलाता है बचपन हर बार?

रोज़ दादाजी का हाथ पकड़ कर टहलने जाना और आते वक्त दादाजी से चाकलेट की ज़िद् करना बचपन में सबको पसंद था। दादी की प्यार वाली डांट और अपनी गोद में बिठा कर खूब सारा दुलार करना, तो आपको भी याद आता होगा न? बचपन की बहुत सी धुंधली पड़ी यादों में आज भी नानी के घर की यादें बिल्कुल ऐसी ताज़ा हैं, जैसे कल ही की बात हो। गर्मियों में स्कूल की छुट्टियां इसलिए अच्छी लगती थीं, क्योंकि उन छुट्टियों को हम नानी के घर जाकर बिताते थे। सारा दिन मौज-मस्ती करने पर भी कोई डांटता नहीं था, और शाम होते ही घर के सारे बच्चे नानी की चारपाई के पास बैठकर उनसे उनकी जवानी के किस्से और कहानियां सुना करते थे।

नानी की कहानियां सुनना इतना दिलचस्प होता था कि कहानी खत्म होने तक घर के बड़े भी हमारे साथ बैठकर कहानी सुनते हुए दिखाई देते थे। मेरे बचपन की इन यादों ने आपको अपने बचपन की याद दिलाई या नहीं? मुझसे पूछो तो मैं तो यही कहूंगी कि हम सब के बचपन में नानी-दादी की कहानियां और उनके प्यार से जुड़ी यादें लगभग एक जैसी ही होती हैं। दादा-दादी और नाना-नानी के घर में खुशियां और सुकून हुआ करता था, जिसे फिर से पाया तो नहीं जा सकता, पर उसकी यादों का हाथ पकड़ कर, वही बचपन वाला एहसास लिया जा सकता है। तो फिर चलिए मेरे साथ बचपन की गलियों की सैर पर।

दादा-दादी की कहानियां और बचपन

एक वक्त था, जब बच्चे दादा-दादी की गोद में बैठ कर, दादी मां की कहानियां सुना करते थे, लेकिन अब दादी मां की कहानियों में छिपे अनोखे प्यार की जगह मोबाइल ने ले ली है। बच्चे अब दादा-दादी की कहानियां सुनने से ज़्यादा वक्त फोन के साथ बिताते हैं। कहते हैं, जिन घरों में बच्चे दादा-दादी या नाना-नानी के साथ रहते हैं, वहां बच्चों में संस्कार और आदर्श भाव खुद-ब-खुद आ जाते हैं। हमें अपने बच्चों को किसी वीडियो गेम या मोबाइल की गंदी आदत की बजाय नानी या दादी मां की कहानियां सुनने की आदत डालनी चाहिए।

क्योंकि दादी मां की कहानियां बच्चों को बहुत कुछ सिखाती हैं। नानी मां या दादी मां की कहानियां नैतिकता और ज्ञान से भरी हुई होती, जिनसे बच्चे ज़िंदगी के बहुत से सबक सीख जाते हैं। घर के बुजुर्गों से बच्चे जो कुछ सीखते हैं, वो बच्चों की बचपन की जड़ों में खाद और पानी का काम करता है, जैसे पेड़ अच्छा खाद और पानी पाकर, खूब बढ़ते हैं, उसी तरह बच्चे भी दादी-नानी या दादा जी-नाना जी के प्यार और आशीर्वाद से अपने जीवन में सकारात्मक शुरुआत करते हैं।

देश को एक सूत्र में बांधे रखने के लिए एक भाषा की आवश्यकता है और वह भाषा है हिन्दी। - सेठ गोविंददास

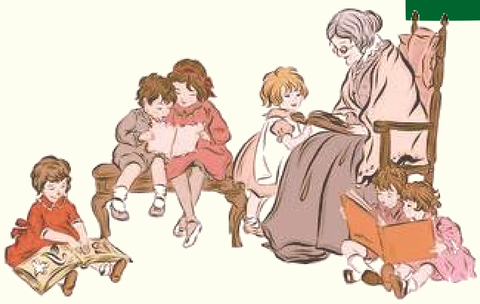

दादी-नानी के बिन अधूरा है बचपन

मैं बहुत छोटा था, जब मेरी दादी गुज़र गईं। उनके साथ बिताई बचपन की यादों में मुझे अब सिर्फ उनकी शक्ल ही याद है। हम सब में ऐसे बहुत ही कम लोग होते हैं, जो अपने बचपन को नानी-दादी के प्यार के साथ बिता पाते हैं, क्योंकि हमारे बड़े होते-होते उनकी उम्र हो जाती है। सच यह भी है कि वो लोग बहुत खुशनसीब हैं, जिनके घर के बुजुर्ग आज भी उनके साथ हैं। घर के बच्चे और घर के बुजुर्ग दोनों ज़िंदगी के दो कोनों जैसे होते हैं, एक में जीवन की शुरूआत हो रही होती है और एक जीवन के आखिरी पड़ाव पर होते हैं। ज़िंदगी के इन दो कोनों का रिश्ता अटूट होता है। दादी-नानी बच्चों को संस्कार देती हैं और उन्हें एक अच्छा इंसान बनना सिखाती हैं। सच में, उनके बिना बचपन अधूरा है, वो घर की मजबूत नींव होते हैं।

क्या आपको भी बचपन बुलाता है?

जब किसी पार्क में बच्चों को एक बॉल के लिए झगड़ते देखते हो, या कंधे पर भारी बस्ता टांग कर, छोटे-छोटे बच्चों को स्कूल की तरफ भागते देखते हो, तब तुम्हारे अन्दर का बच्चा भी फिर से भागने की ज़िद करने लगता है न? बचपन निकल गया, लेकिन मन से उसका एहसास कभी नहीं जाता। हम सब के अंदर बैठा, वो मासूम सा बच्चा आज भी बाहर आने की तलाश में रहता है। हमारे अंदर का बचपना कभी बच्चों को खेलता देखकर, उनके साथ खेलने को कहता है, तो कभी बारिश के पानी में बहती कागज की नावों को देखकर, खुद भी एक कागज की नाव बनाकर उस पानी में बहा देना चाहता है। हमारे अंदर का बचपना कभी किसी की गोद में सिर रखकर, बचपन की तरह सो जाना चाहता है, तो कभी सड़कों पर बिना किसी की परवाह किए बस दौड़ लगा देना चाहता है। उम्र बढ़ गई तो क्या हुआ? हमारे अंदर के बच्चे और बचपने को ज़िंदा रखने और उसकी ख्वाहिशें पूरी करने की ज़िम्मेदारी तो हमारी है। कभी मौका मिले तो उसी बचपने को फिर से जीओ। दादी मां की कहानियां फिर से याद कर लो, या संभव हो दादी-नानी की कहानियां, उनकी ही जुबानी फिर से सुन लो। बचपन की तरह फिर खेलने निकल जाओ या दादी-नानी की गोद में सिर रखकर सुकून से सो जाओ। उनकी सुनो, अपनी कहो, उनसे दिल खोल कर बात करो। अपने अंदर बचपन संभाल कर रखो, और बचपन बुलाए तो फिर उन यादों को जीने बेझिझक चले जाओ।

कृत्रिम बुद्धिमत्ता (ए.आई.)

कृत्रिम बुद्धि, नव विज्ञान,
बढ़ाए कार्यों की पहचान।
मशीनों से काम आसान,
हर क्षेत्र में बड़े मान।
रोगों का अब जल्दी पता,
कृषि में दे नई दिशा।
शिक्षा, व्यापार में सहायक,
निर्णय ले ये बनकर चालाक।

पर सावधानी भी है जरूरी,
न हो मानवता की दूरी।
रोज़गार पर हो असर,
न बड़े असमानता का डर।
फिर भी लाभ अधिक हैं इसके,
यदि प्रयोग हों सही तरीके।
मानव संग करे सहयोग,
तो बने विकास का संजोग।

तेजश्री सुभाष शिंदे
सहायक श्रेणी-III (तकनीकी),
मण्डल कार्यालय, होशियारपुर

इस विशाल प्रदेश के हर भाग में शिक्षित-अशिक्षित, नागरिक और ग्रामीण सभी हिन्दी को समझते हैं।
- राहुल सांकृत्यायन

अगर मिल जाती मुझे वह खिड़की वाली सीट

प्रदीप मिश्रा
प्रबन्धक (परिचालन)
भारतीय खाद्य निगम,
आंचलिक कार्यालय (उ.) नोएडा

अगर मिल जाती मुझे वह खिड़की वाली सीट,
खिड़की से आते तेज़ हवा के झोंके,
और मन में उठते विचारों में जद्दोजहत होती ।
इस मंथन में शायद कोई 'शब्द कलश' निकल आता,
तो मैं भी एक 'अमर कवि' बन जाता।
अगर मिल जाती मुझे वह खिड़की वाली सीट ।

बंजर भूमि पर उगे बेर, बमूर और करौंदे के झुरमुट देखता,
बमूर के काँटों से पत्तियाँ छांटकर खाती बकरियों का झुंड,
उन्हें देखकर, मैं भी जीवन के पथरीले रास्तों पर,
मंज़िल का रास्ता ढूंढने लेने की प्रेरणा पा लेता।
अगर मिल जाती मुझे वह खिड़की वाली सीट।

बलखाती बहती नदी को देखकर उमंग पा लेता,
बछड़े को दूध पिलाती गइया से ममता समझ लेता ।
बीहड़ों में फैले पगडंडियों के मकडजाल को देखकर,
मन में छुपे रहस्यों का शायद कोई भेद जान लेता।
अगर मिल जाती मुझे वह खिड़की वाली सीट।

किसी स्टेशन पर, चिलचिलाती धूप में, यात्रियों को,
निःशुल्क पानी पिलाने वालों से निःस्वार्थ भाव समझ लेता ।
स्टेशन पर, कनियाँ में बच्चा उठाये भीख माँगती किशोरी से,
उसकी लाचार आँखों को देख, विवशता का पर्याय जान लेता।
अगर मिल जाती मुझे वह खिड़की वाली सीट।

जंगल से गुजरती रेल तो मुस्कुराते साल, छूला, सागौन देख पाता,
प्राणवायु और वर्षा उत्पन्न करने का अद् भुत रहस्य जान लेता ।
पर्वतों और खाइयों में की गई नक्काशी को देखकर,
प्रकृति की रचनात्मकता पर ओतप्रोत हो जाता।
अगर मिल जाती मुझे वह खिड़की वाली सीट।

समस्त आर्यावर्त या ठेठ हिन्दुस्तार की राष्ट्र तथा शिष्ट भाषा हिन्दी या हिन्दुस्तानी है। - सर जॉर्ज ग्रियर्सन

भारतीय खाद्य निगम, आंचलिक कार्यालय (उ.) में आयोजित विभिन्न कार्यक्रमों की झलकियां

भारत की परंपरागत राष्ट्रभाषा हिन्दी है। - नलिनविलोचन शर्मा

प्रबल प्रकाश
स.श्रे.तृ. (सा.)
भारतीय खाद्य निगम
आंचलिक कार्यालय (उ.), नोएडा

सुनहरे ख्वाब

पेड़ की ठंडी छाया में बैठे अजय की नींद तब टूटी जब उसके चेहरे पर धूप की हल्की-हल्की सी किरण पड़ने लगी। अब वह अचानक से अपने सपनों की दुनिया से बाहर आ गया। अजय एक गरीब घर का सबसे छोटा बेटा था। वह हमेशा अपने माता-पिता से नई – नई बातें पूछता रहता था परन्तु उसके माता-पिता उसकी बातों का जवाब देने में सक्षम नहीं थे। क्योंकि वे स्वयं कभी विद्यालय नहीं गए थे। अजय की जिज्ञासाएं उसके उम्र के लोगों से बहुत बड़ी थी। क्योंकि अजय दुनिया को अलग नजरिए से देखता था।

आज अजय ने अपने विद्यालय में एक हवाई जहाज को उड़ते देखा, वह जिज्ञासावश उसे देखता ही रहा, उसे लगा कि यह हवाई जहाज कैसे हवा में उड़ लेते हैं। ऐसा क्या है कि इंसान हवा में नहीं उड़ पाते। इसलिए यह सवाल उसने अपने कक्षा के अध्यापक से पूछी परन्तु अजय अभी सिर्फ कथा-2 का छात्र था, इसलिए अध्यापक ने उसे गोल मोल बातें बताकर उसे शान्त करा दिया। परन्तु शायद अजय को उसका जवाब नहीं मिला था, इसलिए घर आकर उसने अपनी मां से यह सवाल पूछा कि मां आसमान में ये हवाई जहाज कैसे उड़ते हैं। हम इंसान क्यों नहीं उड़ सकते। परन्तु उसकी मां इतनी पढ़ी लिखी नहीं थी कि वह अपने बेटे का जवाब पूरी तरह से दे पाती परन्तु उसने काफी प्रयास किया ताकि वह अपने सीमित ज्ञान से अपने बेटे के पूछे गए प्रश्न का जवाब दे पाए। अजय अपनी मां के जवाब से सहमत तो हुआ परंतु शायद वह अभी और बातें जानना चाह रहा था। और वह इसी बात को सोचते हुए सो गया और अपनी सपनों की दुनिया में खो गया।

अगले दिन सुबह उसने सुना कि उसके पिताजी जोर-जोर से रो रहे हैं। कारण जानने के लिए वह बाहर आया तो उसने देखा कि बाहर गांव में बाढ़ आ चुकी है। सारा गांव पानी से भर चुका है। उसके खेत, खेल का मैदान, विद्यालय सब पानी से भर चुके थे। इस बाढ़ को देखकर उसके पिता ने कहा शायद इस वर्ष हम पेट-भर कर भोजन भी न कर पाएं। परंतु इस छोटे से बालक अजय को यह सब-कुछ समझ नहीं आ रहा था। परंतु वह इतना जानता था कि उसके पिता एवं गांव के अन्य लोगों के साथ बहुत गलत हो रहा है क्योंकि खेती ही उनके लिए आजीवका का साधन था।

बाढ़ आए हुए एक महीना बीत चुका था। सारे लोग अपने दैनिक कार्यों को पुनः आरंभ कर चुके थे। इसी बीच अजय भी अपने विद्यालय गया पर उसने देखा कि उसके प्रधानाध्यापक ने बच्चों को एक कतार में खड़ा कर रखा है। जब वह पास पहुंचा तो उसने देखा कि उसके प्रधानाध्यापक ने उसने एवं अन्य बच्चों को विद्यालय से बाहर निकाल दिया क्योंकि वह अपने विद्यालय की फीस समय पर जमा नहीं कर पाया था। आज अजय के जीवन में बहुत उदासी वाला दिन था। इस कारण से वह आज रात को ठीक से सो भी नहीं पाया। उसकी रात बस उठ कर बैठने में और आकाश की तरफ देखते हुए निकल गई।

वक्त का पहिया अपनी गति से घूमता रहा। अब अजय काफी बड़ा हो चुका था। वह अपने पिता के साथ उनके खेतों के काम करवाता था। परंतु आज भी अजय के मन में वह दिन अचानक से याद आ जाता जिस दिन उसे उसके प्रधानाध्यापक ने विद्यालय से बाहर निकाला था कि क्योंकि उसके पास फीस जमा करने के लिए पैसे नहीं थे।

जब से हमने अपनी भाषा का समादर करना छोड़ा तभी से हमारा अपमान और अवनति होने लगी।
– (राजा) राधिकारमण प्रसाद सिंह

अब अजय ने ठान लिया था कि अब वह स्वयं एक ऐसा विद्यालय खोलेगा जो कि बच्चों के लिए मुफ्त होगा। परंतु उसके इस सपने में कई सारी बाधाएं थी। सबसे पहले यह कि उसके पास इतना धन नहीं था कि वह अक विद्यालय खोल सके। अतः उसने अपने गांव के साहूकार से कर्ज उधार लिया और गांव के पास ही उसने तीन कमरों एवं एक बरामदा सहित जगह देखी और नई ऊर्जा के साथ विद्यालय का शुभारंभ किया। इस कार्य में उसके गांव के लोगों ने भी उसका साथ दिया क्योंकि वे सब भी चाहते थे कि उनके बच्चे इस दुनिया में आगे बढ़े और पढ कर अपना नाम रोशन करे।

विद्यालय खुले हुए पांच महीने बीत गए। अब सबसे बड़ी समस्या आ गई कि अध्यापकों का वेतन कैसे दिया जाए। अजय ने एक तरकीब सोची एवं उसने अपने सह अध्यापकों से साझा किया। सारे लोगों ने हां में सिर हिलाया। उसने बच्चों से कहा कि वह मिट्टी के बर्तन एवं लकड़ी की उपयोग करने वाली वस्तुएं बनाएंगे जिससे कि बच्चों का मानसिक एवं शारीरिक विकास होगा एवं बच्चे कुछ नया भी सीखेंगे और उसकी यह तरकीब काम कर गई। कुछ ही दिनों में बच्चों ने अपने विवेक का उपयोग करते हुए मिट्टी के बर्तन, लकड़ी की उपयोगी वस्तु एवं कलाकृतियां बनाना आरंभ किया जोकि वे पास के शहर में बेच देते थे। उससे उनका धन अर्जन होता था। अब वह स्कूल में बच्चों को मुफ्त शिक्षा देने के साथ-साथ, अध्यापकों का वेतन भी प्रदान कर पा रहा था। और यह सब देखते हुए अजय बहुत खुश हुआ। उसने कहा कि उसने जो सोचा था आज उसने कर दिखाया। अब कोई भी बच्चा फीस जमा कर पाने की वजह से बाहर नहीं निकाला जाएगा। अपने उस विद्यालय को देखते हुए अज की आंखें आंसुओं से भर आईं। क्योंकि शायद वह स्वयं नहीं पढ़ पाया परन्तु उसकी वजह से आज कई सारे बच्चे पढ़ पाएंगे और अपना एवं अपने माता-पिता का नाम रौशन करेंगे।

अजय की कठिन परिश्रम एवं लगन ने उसके सपने को आज साकार कर दिया। इसीलिए यह कहते हैं कि "लहरों से डरकर नौका पार नहीं होंती, कोशिश करने वालों की कभी हार नहीं होती।"

"बधाईयां"

डॉ. ए. वी. राव, उप महाप्रबंधक (राजभाषा) को राजभाषा विभाग स्वर्ण जयंती समारोह के उपलक्ष्य में आयोजित लघु फिल्म निर्माण प्रतियोगिता में सांत्वना पुरस्कार प्राप्त हुआ है।

अपनी सरलता के कारण हिन्दी स्वयं ही राष्ट्रभाषा हो गई है। - भवानीदयाल संन्यासी

विकास त्रिपाठी
सहायक श्रेणी प्रथम (सामान्य)
आंचलिक कार्यालय (उ.), नोएडा

राजभाषा हिंदी की विकास यात्रा

भारत विविधता का देश है। इसकी विविध भौगोलिक व राजनीतिक तथा साहित्यिक स्थिति के कारण यहां विभिन्न प्रकार की भाषाएं बोली जाती है। इन विभिन्नताओं के होते हुए भी एक भाषा हिंदी ने इन सबके बीच सामंजस्य /तालमेल बनाया है।

मनुष्य एक सामाजिक प्राणी है और वह भाषा के माध्यम से अपने विचार व्यक्त करता है। पूर्व-औपनिवेशिक काल में अंग्रेजी भाषा के होते हुए भी क्रांतिकारियों को व सभी स्वतंत्रता सेनानियों को हिंदी भाषा ने एकजुट रखा।

स्वतंत्रता प्राप्ति के पश्चात् भारत की संविधान सभा ने 14 सितंबर 1949 को हिंदी दिवस मनाए जाने का निर्णय लिया।

ब्रिटिश शासनकाल में हिंदी का महत्व हिंदी के कई महत्वपूर्ण योगदान रहे। हिंदी ही वो भाषा बनी जो आम जन तक क्रांतिकारियों का संदेश पहुंचाने में सफल रही। हिंदी ने स्वतंत्रता सेनानियों को एकजुट रखा। स्वतंत्रता की लड़ाई में हिंदी पत्रिकाओं का भी महत्वपूर्ण योगदान रहा।

हर वर्ष 14 सितंबर को हिंदी दिवस मनाए जाने के अलावा 10 जनवरी को विश्व हिंदी दिवस मनाया जाता है। 14 सितंबर को भारत में हिंदी भाषा के विकास के लिए सभी कार्यालयों व विभागों में कई कार्यक्रम आयोजित किए जाते हैं। इन कार्यक्रमों के माध्यम से हिंदी का प्रचार-प्रसार तथा हिंदी के प्रति जागरूकता का संचार किया जाता है।

10 जनवरी को होने वाले हिन्दी दिवस का आयोजन सर्वप्रथम नागपुर में 1975 में किया गया था। उसके पश्चात् इसका आयोजन प्रत्येक वर्ष किया जाता है। इसके माध्यम से सभी देशों में स्थित भारत के दूतावासों में कई कार्यक्रम आयोजित किए जाते हैं।

14 सितंबर तथा 10 जनवरी के हिंदी दिवसों का मुख्य उद्देश्य हिंदी का विकास, प्रचार तथा जागरूकता फैलाता है। 14 सितंबर के आयोजन में सभी राज्यों की भागीदारी होती है और देश के अंदर स्थित सभी कार्यालयों में हिंदी का प्रचार तथा जन सामान्य तक हिंदी के प्रति जागरूकता मुख्य उद्देश्य है। वहीं 10 जनवरी के आयोजन में विभिन्न देशों की भागीदारी, देश के बाहर हिंदी का प्रचार व प्रसार, सभी दूतावासों में कार्यक्रम का आयोजन, विदेशों में हिंदी बोले जाने वालों की संख्या में वृद्धि सम्मिलित होती है।

हिंदी के विकास को दृष्टिगत करते हुए हमारे देश के राष्ट्रपिता महात्मा गांधी जी ने कहा था कि 'बिना हिंदी का विकास किए देश का विकास संभव नहीं है।'

हिंदी को 14 सितंबर 1949 को राजभाषा का दर्जा तो मिल गया किंतु इसे अभी राष्ट्रभाषा का दर्जा प्राप्त नहीं हुआ है। इसका मुख्य कारण औपनिवेशिक काल से अंग्रेजी का अत्यधिक प्रयोग, अंग्रेजी को महत्वता प्रदान किया जाना है। किन्तु वर्तमान में औपनिवेशिक काल का असर अभी भी दिखाई पड़ता है, क्योंकि भारत में अंग्रेजी का प्रयोग अभी भी बहुतायत पर होता है।

भारतीय एकता के लक्ष्य का साधन हिन्दी भाषा का प्रचार है। - टी. माधवराव

हिंदी के विकास में बाधक हैं – 1. कार्यालय के अधिकतर कार्य अंग्रेजी में होना 2. प्राथमिक शिक्षा का अधिकांश भाग अंग्रेजी में होना 3. व्यावसायिक शिक्षा का अंग्रेजी में होना 4. न्यायललय के महत्वपूर्ण आदेश का अंग्रेजी में प्रकाशित होना।

वर्तमान में अंग्रेजी शिक्षा के प्रसार को कम करने के लिए मंत्रालय द्वारा विभिन्न प्रकार के कार्यक्रम, गोष्ठी, अनुसंधान को बढ़ावा दिया जा रहा है जिससे हिंदी के यथेष्ट लक्ष्य को प्राप्त किआ जा सके।

भारत में साहित्यिक और भौगोलिक विविधता के कारण बहुत सी भाषाएं मुख्यतः 22 भाषाएं हैं लेकिन हिंदी को राजभाषा का दर्जा प्राप्त है। संविधान के अनुच्छेद 343 के अनुसार भारत की राजभाषा हिंदी तथा लिपि देवनागरी होगी। इस संवैधानिक संरचना के होते हुए भी अभी भारत की राजभाषा हिंदी को राष्ट्रभाषा का दर्जा प्राप्त नहीं हुआ है।

राहुल सांकृत्यायन तथा डॉ. राजेन्द्र प्रसाद के साहित्यों ने भारत की राजभाषा के प्रसार के महत्वपूर्ण कार्य किए। डॉ. राजेन्द्र प्रसाद ने कहा था कि "यदि कोई अपनी भाषा तथा साहित्य के विकास का महत्व/गौरव न समझ पाए तो वह देश कभी विकास नहीं कर सकता।" अतः इस कथन को आदर्श मानते हुए हमें अपनी राजभाषा हिंदी को राष्ट्रभाषा बनाने के लिए दृढ संकल्पित होना चाहिए।

हिंदी भाषा के विकास को देखते हुए यह पंक्ति उचित प्रतीत होती है:
"मन की भाषा, प्रेम की भाषा, हिंदी है भारत जन की भाषा।"

मन की व्यथा

मनोज कुमार यादव
सहायक श्रेणी द्वितीय (तक.)
वाणिज्य अनुभाग
मंडल कार्यालय कोटा

क्या पाया क्या छूट गया,
मन की व्यथा सुनाता हूँ।
खेतों पर जाना छूट गया,
पिकनिक पर जाने लगा हूँ।
रजको के खेत छूट गए,
लॉन में घास उगाने लगा हूँ।
दूध, छाछ, मक्खन छूट गया,
चीज, बटर, फ्लेवर्ड मिल्क पीने लगा हूँ।
तितली/भौरों का साथ छूट गया,
मच्छर/मक्खी उड़ाने लगा हूँ ।
गुड़-बाजरे के लड्डू छूट गए,
दुकानों से मिठाइयाँ लाने लगा हूँ।
बगीचों से फल तोडना छूट गया,
फल- सलाद ऑनलाइन मंगाने लगा हूँ ।
बड/पीपल की हवाएँ छूट गयी,
ए.सी. की हवाएँ खाने लगा हूँ।
नदियों/झरनों का पानी छूट गया ,
आरओ का पानी पीने लगा हूँ।
बयाओं के घोसले छूट गए,
मंजिलो, मकान बनाने लगा हूँ।
गिल्ली डंडा छूट गया,
इन्स्टा पर फ्रेंड बनाने लगा हूँ।
दाल बाटी चूरमा छूट गया,
पिज्जा बर्गर खाने लगा हूँ।
कच्चे रास्ते छूट गए,
हाईवे पर जाने लगा हूँ।
मन का मस्ताना छूट गया,
जिम्मेदारियां निभाने लगा हूँ ।।

"भारतीय खाद्य निगम, आंचलिक कार्यालय (उत्तर) के सौजन्य से आयोजित विशेष हिंदी कार्यशाला - 14-15 अक्टूबर, 2024, अमृतसर की झलकियां।"

यह संदेह निर्मूल है कि हिन्दी वाले उर्दू का नाश चाहते हैं। - डॉ. राजेन्द्र प्रसाद

शिक्षा के प्रसार के लिए नागरी लिपि का सर्वत्र प्रचार आवश्यक है। - शिवप्रसाद सितारेहिंद

वर्षा सक्सेना
सहायक श्रेणी तृतीय
भारतीय खाद्य निगम
मंडल कार्यालय, लखनऊ

मृत्यु नहीं, मुक्ति

"तुम तो किसी बद्दुआ के काबिल भी नहीं, तुमको दुआ क्या देनी।"

अपनी बड़ी ताई के ऐसे शब्दों को सुनकर शैफाली अपने गुस्से पर काबू नहीं कर पायी। उसने खाने की थाली किनारे सरका दी और बोली, "हाँ तो मत दीजिए दुआ। इतनी बड़ी भी आपकी दुआ के बिना हुई हूँ, आगे भी ज़िन्दगी चल जाएगी।" इतना कहकर शैफाली वहाँ से चली जाती है और बाकी बचे रिश्तेदार उसे देखते रहते हैं।

सुबह से घर में लोगों का आना-जाना लगा हुआ था और शैफाली अपने घर की ही एक अन्य सदस्य के साथ काम में लगी हुई थी। काम के प्रति उसकी ऐसी लगन थी कि वो सुबह से एक निवाला भी अपने गले से नीचे नहीं उतार पायी। सबको खाना खिलाने के बाद जब वो खाने के लिए बैठी तो उसकी बड़ी ताई, जिसे वो एक वक़्त पर अपने रिश्तेदारों में शायद सबसे ज्यादा पसंद करती थी, ने घर से जाने से पहले उसके कान के पास आकर ये शब्द कह डाले। उस दिन बात शायद वहीं खत्म हो जाती लेकिन एक महीने पहले शैफाली ने जिस रास्ते पर चलने की ठानी थी, उसमें मुश्किलें तो आनी ही थीं और उसे पहले ही पता था कि दोष उसे ही दिया जायेगा।

वो अपने कमरे में बिस्तर पर औंधे मुँह पड़ी थी और एक महीने पहले की वो रात उसकी आँखों के सामने से गुजरने लगी। उस रात उसके पास सिर्फ दो ही रास्ते थे, मौत या फिर बगावत। पिछले एक लम्बे वक़्त से खुद के लिए अकेले लड़ते-लड़ते उसे लगने लगा था कि शायद आत्महत्या ही उसके जीवन के दुखों को खत्म कर सकती है लेकिन उस रात जब उसने ब्लेड से अपनी नस काटनी चाही तो उसके तमाम ख्वाब उसके सामने आकर खड़े हो गए। उसने कहीं पढ़ी हुई पंक्तियाँ अपने मन में बार-बार दोहराई, "मुझे मृत्यु नहीं, मुक्ति चाहिए।"

बचपन से ही लड़की होने का भार अपने कंधो पर उठाए वो अपने ख़्वाबों की तरफ भागती जा रही है। बहुत बार गिरती है, लड़खड़ाती है, चोटिल होती है, लेकिन अब उसने किसी से भी उसकी मदद करने की उम्मीदें छोड़ दीं हैं। उसकी इस उम्मीद को छोड़ने के पीछे एक गहरी मायूसी छुपी है जो शायद ही उसके आसपास मौजूद लोग देख पाते होंगे। सबकी अपनी उम्मीदें थीं उससे। कोई चाहता था कि वो जल्दी से शादी करके एक नई पीढ़ी बनाये, कोई चाहता था कि उसका कुर्ता उसके घुटनों के नीचे तक होना चाहिए ताकि लोगों की गंदी नज़रों से घर की इज्जत बची रहे, कोई चाहता था कि वो अपने अंदर की कला को मारकर दुनिया के बनाये पैमाने पर खुद को साबित करे तो किसी को उम्मीद थी कि वो एक कमरे में बंद रहने के बावजूद दुनिया के सामने मिसाल बन जाये। हर तरह की उम्मीदों से परे उसकी भी खुद से कुछ उम्मीदें थीं जिनको वो बार-बार मन में दोहराती रहती थी। कुछ ऐसे ख्वाब जिसने उसको अब तक ज़िंदा रखा था।

हमारी हिन्दी भाषा का साहित्य किसी भी दूसरी भारतीय भाषा से किसी अंश में कम नहीं है।
- (रायबहादुर) रामरणविजय सिंह

आज इस बात को करीब चार साल होने को आए। आज भी घर में जश्न का माहौल है क्योंकि उसकी बड़ी ताई आज नानी बन गई हैं। शैफाली ने जैसे ही कमरे में कदम रखा, सबकी नज़रे उस पर टिक गईं। बड़ी ताई ने आगे आकर बच्ची को शैफाली की बांहों में सौंप दिया और बोलीं, "दुआ देना कि बिटिया तुम्हारी जैसी बने और ख़ूब नाम कमाए। तुमने घर का नाम रौशन किया है। अगर तुम्हारी भांजी तुम्हारा एक अंश भी बन सके तो मुझे बहुत ख़ुशी होगी।"

"तुम अपने जैसी बनना। तुम्हें किसी की परछाई बनने की जरूरत नहीं है।", और इतना कहकर शैफाली ने बच्ची के माथे को चूम लिया।

सफल लोगों के पीछे तो दुनिया पागल है लेकिन जब आप अपने हक़ के लिए सबसे लड़ रहे होते हैं तो आपके अंदर के कुछ हिस्से उन लोगों के द्वारा कही बातों से खत्म होने लगते हैं। हार के पीछे छुपा अवसाद किसी को नज़र नहीं आता लेकिन जीत के बाद आपके इर्दगिर्द तालियों और सलामियों की गूँज रहती है। मृत्यु नहीं, मुक्ति की खोज जरूरी है ताकि किसी भी व्यक्ति को सुकून के एहसास के लिए आत्महत्या का रास्ता न चुनना पड़े और शायद किसी एक दिन आने वाली पीढ़ी उम्मीदों के बोझ से बच जाये।

हिंदी को संभाले हैं

हृदय के स्पंदन सी जीवंत,
जो कानों में घोले मिश्री के प्याले हैं,
पुरस्कार की कुछ बूंदों के सहारे,
उस हिंदी को हम संभाले हैं।

जन्मी जो देव भाषा के अंतस से,
वर्ष एक हज़ार का इतिहास लिए,
भारत के जनमानस में गयी रचती - बसती,
पांच विकास क्रमों के बदलाव पिए।
सरल ऐसी की शब्द रसना से फिसलते रहे,
और बोले तो सुर जैसे घूंघरु मतवाले हैं,पुरस्कार की .....

सराबोर वीर रस से रहती हरिओम – दिनकर की लेखनी से,
और छलकती जाती जो सुभद्रा के चेतन्य सी,
लजियाती पंत, निराला और महादेवी के मोहक श्रृंगार से,
रहती इठलाती भाषाई माता मेरी – हमारी धन्य सी।
भेद कुल ग्यारह रस के आँचल में रहे पलते,
जैसे गोकुल की गैया संग कान्हा और ग्वाले हैं,पुरस्कार की .....

ग्यारह स्वर, चालीस व्यंजन, अनुस्वार - विसर्ग के संगम से,
सजती – रूप लेती जाती देवनागरी में मोतियों के संग सी,
उत्तरदायित्व है हमारा कि यह बढ़ती रहे प्रगति के सोपान पे,
धारण किये शिव गौरा के समर्पित प्रेम भाव की तरंग सी।
संचरति मिलन सर्द-गर्म मौसम का जैसे होता ऋतु “शरद” में,
उठ जाएँ हिंदी के उत्थान को वैसे हर हाथ में मशालें हैं,
फिर ना कह सके कोई कि पुरस्कार की .....

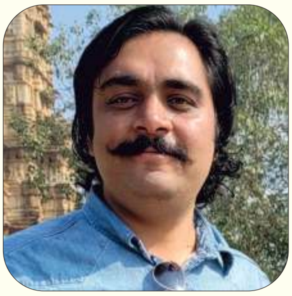

शरद भारद्वाज
प्रबंधक (परिचालन)
भारतीय खाद्य निगम
मंडल कार्यालय, पटियाला

वही भाषा जीवित और जाग्रत रह सकती है जो जनता का ठीक-ठीक प्रतिनिधित्व कर सके। और हिन्दी इसमें समर्थ है। - पीर मुहम्मद मूनिस

नींव में अंबेडकर

संविधान के शिल्पी, न्याय के नायक,
दलितों की आशा, श्रमिकों के भाग्य-विधायक।
बाबा साहेब ने जो सपना बुना,
हर वर्ग को उसमें मिला ठौर व ठिकाना।

1920 से जो उठी आवाज़,
मजदूरों के लिए बनी वो स्थायी गूंज ।
आठ घंटे काम, मातृत्व अवकाश,
संगठित श्रम को मिला उनका विश्वास।

इंडिपेंडेंट लेबर पार्टी की हुंकार,
श्रमिक हितों का पहला सशक्त विचार।
न्यूनतम वेतन, सुरक्षा, बीमा की बात,
उन सुधारों से निकली FCI की सौगात।

संविधान में गूंजी उनकी लेखनी की पुकार,
हर नागरिक को मिले समान अधिकार।
राज्य की नीतियाँ बनी न्याय की जुबान,
FCI में आज भी गूंजे वही विधान।

खाद्य, जल और कृषि सुधार का सपना,
1965 में पाया अपना ठोस ताना-बाना।
FCI की स्थापना, वितरण की नई रेखा,
उस सोच के बीज थे बाबा साहेब का लेखा।

समान अवसर, आरक्षण की बात,
हर कर्मचारी को मिला सम्मान का साथ।
पेंशन, ग्रेच्युटी, यूनियन का हक,
उनके विचारों ने हटाया अन्याय का पंक।

उनकी सोच नहीं थी केवल एक दौर की बात,
वो आज भी हैं हर संस्था की बुनियादी बात।
FCI खड़ा है उनके सिद्धांतों की छाया में,
हर कर्मचारी है सुरक्षित उनकी माया में।

अंबेडकर हैं विचार, अंबेडकर हैं रोशनी,
उनकी नींव से ही बनी FCI की असली कहानी।
वो नहीं थे संस्थापक, पर बने प्रेरणा-स्तंभ,
उनकी दूरदृष्टि से ही मिला FCI को दम।

उदित सिंह
स.श्रे. प्र. (सामान्य)
आंचलिक कार्यालय (उ.)

*(पृष्ठ सं 19 का उत्तर है..... **राजभाषा अधिनियम धारा 3(3)***

भारतेंदु और द्विवेदी ने हिंदी की जड़ें पाताल तक पहुंचा दी है, उसे उखाड़ने का जो दुस्साहस करेगा वह निश्चय ही भूकंपध्वस्त होगा। - शिवपूजन सहाय

दीपा कुनियाल
स.श्रे. प्र. (लेखा)
आंचलिक कार्यालय (उ.), नोएडा

तीसरी छींक

एक गांव में एक 60-70 वर्ष की उम्र का एक व्यक्ति रहता था जो दिखने में अपनी उम्र से काफी हृष्ट-पुष्ट था। उसका नाम था बुधुवा। नाम अनुसार ही वह बुद्धि से थोड़ा मोटा था। घर में उसके बेटे-बहू भी साथ रहते थे पर चलती उसी की थी उसके घर में, जिससे बेटे-बहू में हमेशा तकरार बनी रहती थी। एक दिन बुधुवा ने अपने बेटे-बहू का लड़ना सुन लिया जिसमें बहू कह रही थी, "कब तक रहेगा यह बूढ़ा? हमेशा हुकुम चलाता है, करता-धरता कुछ नहीं।" यह बात बुधुवा को बहुत बुरी लगी। वह सोचने लगा, "हे प्रभु! कब तक मुझे मेरा जीवन जीना पड़ेगा? अब तो उम्र भी हो गई है मेरी। काश! मुझे पता होता मेरी आयु कितनी बची है तो कितना अच्छा होता।"

यही विचार करता हुआ वह एक ज्ञानी पंडित के पास पहुंच गया और कहने लगा, "मुझे मेरी उम्र बता दीजिए पंडित जी। कितना जीवन अभी और शेष है?"
पंडित जी बोले, "बुधुवा जी। जितना अनभिज्ञ रहोगे, उतने ही निश्चिंत रहोगे। वरना रोज घुट-घुट कर मरते रहोगे।"
बुधुवा बिल्कुल न माना और जिद करने लगा। फिर पंडित जी ने पत्री निकाल कर बहुत गहन गणना की और बोला, "तीन छींक।"
बुधुवा बोला, "क्या? बस तीन छींक।"
पंडित जी बोले, "हां। बस तीन छींक। तीसरी छींक और उसके बाद तुम मर जाओगे।"
उसने बोला, "अगर मैं एक महीने में एक बार छींकू तो?"
पंडित जी बोले, "तो तुम तीन महीने तक जिंदा रहोगे।"
वह बोला, "अगर एक साल तक न छींकू तो?"
पंडित जी बोले, "तो तुम तीन साल नहीं मरोगे।"
वह बोला, "अगर पचास साल तो?"
पंडित जी बोले, " तो तुम डेढ सौ साल तक जीवित रहोगे।"
यह सुनकर बुधुवा बहुत खुश हो गया कि मैं और 150 साल तक जी सकता हूं। बस मुझे मेरी छींक को रोक कर रखना है। छींक तो मेरे हाथ में है जब मैं छींकूंगा ही नहीं तो मैं मरूंगा भी नहीं। यह सोचते हुए वह खुशी-खुशी घर आ गया।

वहां देखा तो बेचारे बैल भूख से व्याकुल हो रहे थे। वह भूसे के कोठरे में भूसा लेने चला गया। पर ज्यों ही उसने टोकरा उठाया। वहां फैली भूसों की गर्द से उसने नथूने फूल गए। वह भरसक प्रयास करने लगा कि छींक न आए।

इस प्रयास को करते-करते आखिर 'आक् छी' की एक आवाज आ ही गई। यह उसकी पहली छींक थी। वह सोचने लगा कि 50 साल की पहली छींक तो आज ही आ गई। पर मेरे पास अभी दो छींक शेष है।

बेटे-बहू को समझा-बुझा कर उसने बैलों को भूसा डालने के काम से मुक्ति पा ली। आखिर पहली छींक का कारण जो बनी थी।

फिर अगली सुबहह वह उठकर स्नान करने के लिए कुंए के पास गया। कुंए का ठंडा-ठंडा बानी और वहां चल रही शीतल हवा ने उसे बेचैन कर दिया। वह जल्दी से तौलिए से खुद को पोंछ कपड़े पहनने घर की तरफ चल दिया। पर चल रही शीतल हवा के झोंको ने उसके नथूनों में हवा भर दी। ठंड और हवा के चक्कर में पैर कांपने लगा और अचानक एक विस्फोट हुआ 'आक् छी'।

"हे प्रभु! आज दूसरी छींक आ गई। अब मेरी मृत्यु और जीवन के बीच बस एक छींक का फासला है।" यह बड़बड़ाता हुआ वह घर आ गया।

दिन में उसकी बहु ने बताया कि घर में आटा खत्म हो गया और बेटा खेत में काम करने गया है जोकि शाम तक ही घर आएगा। अब बुधुवा बेचारा भूखा रहने से अच्छा गेहूं का बोरा उठाकर चल दिया चक्की में आटा पिसवाने। बोरा चक्की वाले के पास रख वह एक पेड़ के नीचे चबूतरे पर बैठ गया। फिर सोचने लगा, "अगर इस चक्की वाले ने मेरे आटे में मिलावट कर दी तो?"

"नहीं। नहीं। मैं अपना आटा खुद अपने सामने पिसवाउंगा।" यह बोलता हुआ वह चक्की के भीतर चल दिया।

उस चक्की में कोई खिड़की नहीं थी जिसकी वजह से वहां बहुत गर्द उड़ रही थी। बुधुवा के घुसते ही वह गर्द उसकी नाक में भर गई। बुधुवा ने सांस रोक ली ताकि तीसरी छींक न आ पाए। वह अपना आटे का बोरा उठाकर बाहर की तरफ चल दिया पर सांस ने लेने से उसका दम घुटने लगा। इस कशमकश और प्रयास में अचानक बहुत तेज आवेग में उसे अंदर भरी सारी गर्द और हवा एक साथ बाहर निकली 'आ आ आ क्छी!'

"हे प्रभु! आज दूसरी छींक आ गई। और इसी के साथ वह जमीन में गिर गया और उसकी आटे की बोरी दूर छिटक कर गिर गई। अब मेरी मृत्यु और जीवन के बीच बस एक छींक का फासला है।" यह बड़बड़ाता हुआ वह घर आ गया।

"हाय, मैं मर गया।" वह बोला।

तभी दो कुत्ते उसकी तरफ आ कर अपनी टांग उठाकर कुछ शरारत करने की कोशिश करने लगे।

"अरे शैतान के बच्चों। अगर मैं मरा न होता तो तुम दोनों को अच्छा सबक सीखा देता आज। मेरे मरे होने का नाजायज फायदा उठा रहे हो।" उसकी आवाज सुनकर कुत्ते ठिठक गए और फिर पास के बोरे की तरफ लपके और उसे फाड़ने लगे।

वह फिर चिल्लाया, "अरे शैतान के बच्चों। मेरे जीते जी मेरे बोरे में हाथ लगा कर दिखाते तब तुम्हें मैं बताता।"

उसकी आवाज सुन चक्की का मालिक हाथ में डंडा लेकर आया और बोला, "अरे! तुम यहां इस तरह क्यों पड़े हो?"

बुधुवा बोला, "अरे, तुम देख नहीं रहे। तीसरी छींक आई और मैं मर गया हूं।"

"अच्छा। तो तुम मर गए हो।"

"हां। मैं मर गया हूं।"

"तो कहो। मैं तुम्हारी क्या सहायता कर सकता हूं?" चक्की वाला बोला।

"बस इन कुत्तों से मेरा बोरा बचा लो। अगर मैं जिंदा होता तो इनसे मैं ही निपट लेता। पर मैं तो मर गया हूं।" बुधुवा बोला।

चक्की वाले ने दो डंडे लगाकर उन कुत्तों को वहां से भगा दिया और बोला, "वैसे तुमने कहा तो नहीं है। पर फिर भी मैं तुम्हारी सहायता करना चाहता हूं।" यह कहकर चार डंडे चक्की वाले ने बुधुवा को भी लगा दिए।

बिजली की सी तेज गति के साथ बुधुवा डंडे पड़ते ही खड़ा हो गया और चक्की वाले से बोला, "तुम्हारा बहुत-बहुत शुक्रिया। तीसरी छींक के बाद मैं तो मर ही गया था। तुम्हारे डंडे ने मुझे फिर से जीवनदान दिया है।"

पूरे रास्ते वह उस चक्की वाले के गुणगान करता हुआ गया और सबको बताने लगा कि आज मुझे फिर से नया जीवन मिला है और मैं बहुत खुश हूं।

उस दिन के बाद से आज तक बुधुवा जिंदा है और उसके बाद न जाने कितनी छींक उसे आई पर उसका बाल भी बांका न हो सका।

शिक्षा – वहम् या शंका मनुष्य के आंतरिक मन की चेतना को खत्म कर देती है और इसका कोई इलाज नहीं है। इसलिए जितना हो सके, इससे दूर रखना चाहिए।

हिन्दी जानने वाला व्यक्ति देश के किसी कोने में जाकर अपना काम चला लेता है। – देवव्रत शास्त्री

"डॉ. ए. वी. राव, उप महाप्रबंधक (राजभाषा) एवं श्री पुखराज मीना, सहायक महाप्रबंधक (राजभाषा) द्वारा आंचलिक कार्यालय (उ.) के स्थानीय अनुभागों का राजभाषायी निरीक्षण।"

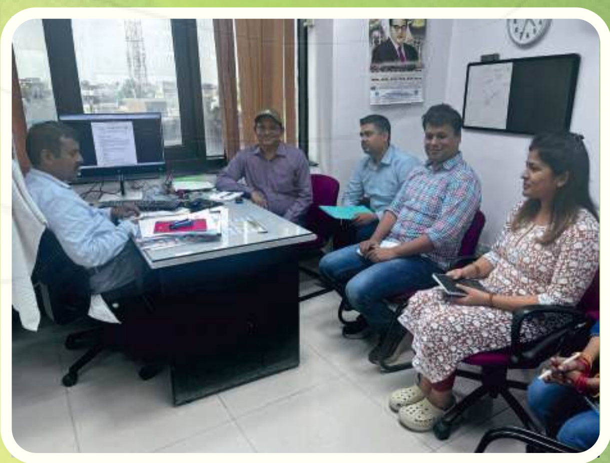

संसदीय राजभाषा समिति निरीक्षण